वर्ष : 18, अंक : 1 अप्रैल से जून 2019 मूल्य 20/-

RNI No.MPHIN/2002/07269

रघुकलश

सामाजिक पत्रिका

विवाह योग्य युवक-युवती

Name : Mayuri Pardeshi, Age :27, Height : 5', Date of Birth : 09th sept 1991, Place of Birth : Nandurbar(Maharashta), Educational Qualification: MBA (Finance), Professional Information- Working Company Name : WNS Global Services, Pune, Family Details- Father's Name: Dilipsing Pardeshi, Mother's Name:Nirmala Pardeshi, Horoscope Details - Sun Sign : Leo, Gotra: Barod, Contact Details, Permanent Address : Pardeshipura Near D R High School, Nandurbar, (Maharashta), Mobile No : 08329277304, 08550929581(Sister), E-mail Id : mayuripardeshi999@yahoo.in

Name : **Neha Verma,** DOB: 31 March 1993, POB: Burhanpur (MP), Zodiac: Gemini, Gotra: Mathneriya, Mama Gotra: Kaan, Caste. Kashatriya. Height. 5 Ft. 4 Inches. Educational Qualification: Pursuing PG-Mtech (Digital Communication), Graduation- B.E. (E.C.), Lanuguage Known: Hindi, English, Family Details. Lives in Joint Family. Grand Father. Late.Shree Pratapsingh Verma: Ret. Principal of Govt.H.S. School, Burhanpur. Grand Mother: Smt. Sudha Verma House wife. Father : Engg. Rajesh Verma, Mother: Smt. Vaishali Verma, Sister: Megha Verma. Address: Opp. Swaminarayan Temple, Silampura, Burhanpur (M.P.) Pin: 450331, Mob.: Mr. Rajesh Verma : 9907701119, Dr. Satish Verma : 9406637331.

Name : **Priyanka Raghuvanshi**, DOB : 26.08.1988, TOB : 2.30 AM, Place of birth : Ahmedabad Gujarat, Gotra : Saunger, Education : B.E. in Computer science from ALL Saint's College of Engineering Bhopal., Occupation : Working as senior software Engineer in Anti money laundering unit in DANSKE IT Bangalore.,Father's Name : Mr. Diwan Singh Raghuwanshi (Govt. Teacher), Mother's Name : Mrs. Asha Raghuwanshi, (House wife), Brothers name : Harsh Vardhan Raghuwanshi, Looking for a well qualified career oriented boy. , Contact details : 8792244498, Email id : priyankar2608@gmail.com

Name : **Saurabh Raghuvanshi,** S/o narendra Singh Raghuvanshi, 19/7 new palasia INDORE Occupation- software engineer, Company- Impulse technology Pune, Dob-13/4/1991, Place-indore, Time-12 night, Height-5 ft 6inch, Gotr-dadhir and rijodia, Contact no.9926949198

नाम: **महेन्द्र सिंह रघुवंशी**
पिता: देवेन्द्र रघुवंशी
शिक्षा : 12वीं पास,
व्यवसाय : खेती-किसानी
गोत्र : हड़ा, मामा : बिल्धईया
जन्म : 1.11.19180
समय : सुबह 4.00 बजे, भोपाल
संपर्क : जी-8, गोयल अपार्टमेंट, गुलमोहर, भोपाल
मोबा. 8462820282, 9098947059

विवाह योग्य युवक-युवती

Name : **Dr. Shalini Raghuwanshi**
Father : Kailash Raghuwanshi
Mother : geeta Raghuwanshi
Senior Resident Vidisha Medical College
Age-27 Yrs
Mbbs & Md Peoples Medical College, Radiodiagnosis
Date of Birth : 27 May 1991
Contect : 9425431528

Name : **Rishabh Raghuwanahi**, DOB: 24 Nov 1990, Hight 5 ft 5 inches colour fair, BE Mechanical, Officer Dena Bank Surat, Gotra Khadaya, Father Dr R K Raghuwanahi (Prof. Govt Kusum P G, College Seoni Malva), 9893266575, Mother: Dr Prabha Raghuwanshi (Asstt Prof. Govt. College Seoni Malawa), Brother: Ashutosh Raghuwanahi BA LLB from NLIU Bhopal, Taujee: Ravishankar farmer, Village Somalwada Seoni Malva, G S Raghuwanshi Retd geology and mining dept Bhopal, R S Raghuwanahi, Retd Planning Commison Bhopal, N S Raghuwanahi Retd Chief Manager Canara Bank Bhopal, R S Raghuwanahi Retd, Chief Engineer irrigation dept Bhopal.

RNI No.MPHIN/2002/07269

रघुकलश

त्रैमासिक सामाजिक पत्रिका

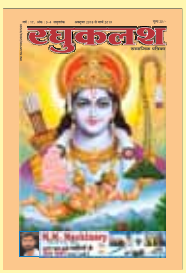

रघुकलश पत्रिका नहीं सामाजिक आंदोलन

रघुकलश के सदस्य बनकर पत्रिका द्वारा चलाए जा रहे सामाजिक आंदोलन में भागीदार बनें सदस्यता राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया या सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया की किसी भी निकटवर्ती शाखा में जमा करवा सकते हैं

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया बचत खाता क्र. - 63000162757
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया बचत खाता क्र.- 3107369760

आजीवन सदस्यता शुल्क रू.1500/-

हजारीलाल रघुवंशी
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा

उमाशंकर रघुवंशी
प्रबंध संपादक, रघुकलश एवं
महासचिव,
अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा

अरूण पटेल
संपादक, रघुकलश एवं
राष्ट्रीय प्रचार सचिव,
अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा

संपर्क : ई-100/41, शिवाजी नगर, भोपाल, मप्र-462016, फोन: 0755-2552432
मो: 9425010804, ईमेल: raghukalash@gmail.com, वेबसाइट: www.raghukalash.com

बधाई...

सभी सामाजिक बंधुओं को हनुमान जयंती की हार्दिक शुभमानाएँ एवं बधाई

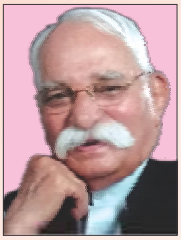
हजारीलाल रघुवंशी

पी.एस. रघु

चौ. चंद्रभान सिंह

उमाशंकर रघुवंशी

शिववरण सिंह रघुवंशी

अजय सिंह

चौरई विधानसभा क्षेत्र से निर्वाचित कांग्रेस विधायक **चौधरी सुजीत मेर सिंह** एवं कोलारस विधान सभा क्षेत्र से निर्वाचित भाजपा विधायक **वीरेन्द्र रघुवंशी** को उनके विधायक निर्वाचित होने पर हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई

चौधरी सुजीत मेर सिंह

वीरेन्द्र रघुवंशी

अजय सिंह रघुवंशी
बुरहानपुर

परशुराम डंडोर
पू.नि. खरगोन

राम नारायण मुकाती

राजेन्द्र रघुवंशी

योगेश रघुवंशी

श्रवण रघुवंशी

सज्जन सिंह जी

रम्मू भाई

हरी सिंह जी

जगदीश रघुवंशी

रतनसिंह रघुवंशी

बलवीर रघुवंशी

चन्दू रघुवंशी
प्रदेश महामंत्री एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य अभारक्षम

वीरेन्द्र रघुवंशी

जगदीश रघुवंशी

परमेश्वर रघुवंशी

कमल रघुवंशी

यतीन्द्र रघुवंशी

सौजन्य से: चन्दू रघुवंशी, प्रदेश महामंत्री अभारक्षम सागौर, धार

रघुकलश

त्रैमासिक सामाजिक पत्रिका

RNI No. MPHIN/2002/07269

वर्ष : 18, अंक : 1 | अप्रैल से जून 2019 | मूल्य 20/-

संपादक की कलम से

परिवर्तनकारी है प्रकृति का स्वभाव

प्रकृति का स्वभाव परिवर्तनकारी रहा है और किसी प्रयास में जड़ता न आये इसलिए यह जरुरी है कि समय की मांग के अनुसार परिवर्तन किया जाए। सामाजिक पत्रिका रघुकलश इस अंक के साथ 18वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। अब इसमें भी नये–नये प्रयोग और नवाचारों की शुरुआत होगी एवं इसमें विषय विशेष पर केंद्रित विशेषांक भी प्रकाशित किए जायेंगे। इसका मकसद यह है कि जिस भी विषय को पत्रिका में उठाया जाए उसे अधिक व्यापकता के साथ एवं विभिन्न विचारों के साथ प्रस्तुत किया जाये। इससे समाज की प्रतिभाओं को भी विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलेगा।

जब कोई नयी शुरुआत करना है तो उसमें विलम्ब क्यों किया जाए, इसी मकसद से रघुकलश का अप्रैल–जून 2019 अंक 'कहानी विशेषांक' के रुप में प्रकाशित किया जा रहा है और इसमें केवल कहानियां ही होंगी। भविष्य में जब भी विषय विशेष पर अंक प्रकाशित किए जायेंगे तब उसकी सूचना पहले से ही रघुकलश पत्रिका में दे दी जाएगी ताकि पाठकगण एवं लेखक उस संबंध में ही अपनी सामग्री भेजें जिससे कि वह अंक संग्रहणीय व अविस्मरणीय बने। सभी सामाजिक बंधुओं से अनुरोध है कि समय–समय पर विषय विशेष पर आमंत्रित की गयीं रचनायें ही भेजें ताकि उन्हें प्रकाशित किया जा सके। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि हमारे इस प्रयोग में सामाजिक बंधुओं, लेखकों व रचनाकारों का हमें भरपूर सहयोग मिलेगा।

रघुकलश पत्रिका, महज एक पत्रिका ही नहीं अपितु सामाजिक आंदोलन है इसका मकसद समाज की प्रतिभाओं को अवसर देने के साथ ही साजिक चेतना और जागृति पैदा करना है। सामाजिक बंधुओं से अनुरोध है कि वे रघुकलश के प्रचार प्रसार में तन–मन–धन से सहयोग करें।

अरुण पटेल

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से

सामाजिक बन्धुओं से मन की बात...

रघुवंशी समाज उस वैभवशाली स्वर्ण युग का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें भगवान श्रराम ने त्रेतायुग में अवतार लिया था। यह सनातन चिरन्तन समाज है। युग–युगान्तर बीते, नवयुग आये, किन्तु हमारा समाज शाश्वत व निरन्तर प्रवाहमान मां गंगा की भांति विगत ऐतिहासिक विरासत को समेटे आज भी अस्तित्व में है। इस पर हम गर्व कर सकते हैं। किन्तु अब मंथन का समय आ गया है। हमारे समक्ष एक यक्ष प्रश्न है कि क्या हम आधुनिक युग की विकास प्रकिया अथवा प्रतिस्पर्धा में कहीं पिछड़ तो नहीं रहे।

अब अतीत का ढिंढोरा पीटने से काम नहीं चलेगा। हम अतीत पर गर्व कर सकते हैं किन्तु उसके साझेदार नहीं हो सकते। यह कलियुग है अर्थात् कर्म का युग है। तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में कहा है–'' कर्म प्रधान विस्व करि राखा।'' गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं ''कर्मण्ये वाधिका रस्ते।'' इन महान संदेशों से स्पष्ट है, हमें पूर्ण समर्पण, दक्षता, कर्मठता एवं विशेषज्ञता के साथ कर्म करते हुए समाज के नव–निर्माण में लग जाना चाहिए। कर्मशील होना चाहिये। अब यह दायित्व विशेषतः हमारी युवा पीढ़ी को चुनौती मानकर अंजाम देना है। मैं उन्हें समाज के विकास के महान एवं पवित्र कार्य में प्राणपण से जुटकर योगदान के लिए आह्वान करता हूं। हम सभी युवा एवं वृद्ध अपने–अपने दायित्वों का निर्वहन करेंगे ऐसा विश्वास है। यह प्रतिस्पर्धा का युग है, आवश्यक है हम उपलब्ध परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनायें। बस विवेकपूर्ण संघर्ष से उन्हें प्राप्त करना होगा। अधिकार अथवा उपलब्धियां प्राप्त करने के लिए संघर्ष और त्याग करना पड़ता है, यह सजा कर थाली में नहीं मिलता, हमारे समग्र समाज को उस ओर उन्मुख होना पडत्रेगा तभी हम सफलता का वरण कर सकते हैं।

आदिकाल में हमारा समाज क्षत्रियोचित कार्यों के कारण सामंतशाही रहा है, किन्तु मध्यकाल से समाज खेतिहर समाज की श्रेणी में रहा है। अब समाज बहु उद्यमी या बहु आयामी मिश्रित अर्थव्यवस्था वाला मिश्रित समाज बनता जा रहा है। विशेषकर हमारी वर्तमान युवा पीढ़ी आन्त्रप्रन्योर, आत्मनिर्भर बनने की दिशा में कदम बढ़ाती प्रतीत हो रही है। समाज के जागरुक, उत्साही व शिक्षित युवा कृषि के साथ ही शैक्षणिक, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, रक्षा, व्यवसाय एवं राजनीति के विभिन्न क्षेत्रों में सहभागी बन अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं साथ ही महत्वपूर्ण योगदान भी दे रहे हैं। मेरी उनसे अपेक्षा के साथ ही विनम्र अपील है कि वह जिस क्षेत्र में भी रहें पूर्ण समर्पण के साथ अपनी विशेषज्ञता, दक्षता तथा कर्मठता की छाप छोड़ें। मैं बेटियों को भी उच्च शिक्षा के समान अवसर तथा आधुनिक परिवेश में सक्रिय करने, आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए सामाजिक बंधुओं से अपील करता हूं।

वर्तमान में हमारे समाज के नवयुवक–नवयुवतियां विदेशों में भी वहां की चुनौतियों का सामना कर समाज के गौरव में चार चांद लगा रहे हैं, इसके लिए वे और उनके परिजन बधाई और प्रशंसा के पात्र हैं। मुझे ज्ञात है कि समाज में कला, संस्कृति एवं साहित्य में अभिरुचि रखने वाले अनेक भाई बहिन हैं। उनसे मेरा आग्रह है कि वह अपनी प्रतिभा एवं साहित्यिक अभिरुचि के विषयों पर लेखन कर सामाजिक त्रैमासिक पत्रिका ''रघुकलश'' में प्रकाशनार्थ भेजकर उसे और समृद्ध बनाने में योगदान दें। रघुकलश में इस अंक से साहित्यिक रचनाओं के प्रकाशन को अधिक जगह दी जाएगी ताकि सामाजिक प्रतिभाओं को इसमें अधिक से अधिक स्थान दिया जा सके। सामाजिक बंधुओं से अनुरोध है कि वे अपनी रचनाएं कहानी, कविता एवं लेख आदि हर अंक के लिए भेजने का कष्ट करें।

हजारीलाल रघुवंशी
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा

सफर में धूप तो होगी

नंदकिशोर बर्वे

यही है जिंदगी... चंद वाब कुछ उम्मीदें इन्हीं खिलौनों से तुम बहल सको तो चलो...''

''जिंदगी शायरी नहीं होती जान्हवी, हकीकत होती है। तुम समझती क्यों नहीं?'' जान्हवी ने जब उक्त लाइनें एक बार फिर दोहराईं, तो जलेश थोड़ा नाराजगी से बोला। ''मैंने भी तो तुहें कई बार रिक्वेस्ट की है, कि तुम शादी कर लो मैं शादी नहीं कर सकती। और ये जो शायरी और हकीकत की बात तुम कर रहे हो ना ये बेमानी है। इसलिए कि तुम खुद हकीकत से आंखें चुरा रहे हो,'' जान्हवी ने कहा। ''मैं तुम पर कोई दबाव तो नहीं बना रहा। मैं इंतजार कर रहा हूं ना,'' जलेश ने उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा। ''ऐसी भी क्या जिद है तुम्हारी जलेश कि शादी करोगे तो सिर्फ मुझसे वरना नहीं।''

जान्हवी ने कहा। ''लेकिन तुम नहीं मिलोगी ना। और जहां तक तुम में ऐसा क्या है यह देखने, जानने के लिए तुहें खुद को मेरी नजर से देखना होगा।'' जलेश ने भावुकता से कहा। ''यह समझने की, महसूस करने की बात है जान्हवी,'' यह कह, जलेश ने सिगरेट सुलगा ली। ''सिगरेट से तुम बाज नहीं आओगे। मुझसे इतना प्यार करते हो, लेकिन मेरी इतनी-सी बात नहीं मान सकते,'' जान्हवी की आवाज में थोड़ी तल्खी आ गई थी। जलेश और जान्हवी दो अलग-अलग पारिवारिक पृष्ठभूमि, खानपान, संस्कार और व्यवहार के धरातल पर एकदम उत्तर दक्षिण ध्रुव जैसे। जलेश एक गुजराती व्यापारिक परिवार से था। अपने व्यवसाय में पूरे मनोयोग से लगे ऐसे परिवार का इकलौता लड़का, जिसमें पीढ़ियों से व्यापार था। इसी कारण आर्थिक रूप से अति संपन्न उसके दादाजी गुजरात से आकर मुंबई में बस गए थे। संपन्न लोगों में प्राय: सुंदरता भी उसी अनुपात में होती है। जलेश का व्यक्तित्व ऐसा था कि उसे देखकर कोई भी मोहित और प्रभावित हो सकता था। कद छह फुट। तीखे नाक नश, गौर वर्ण, ऊपर से उतनी प्रभावी आवाज भी... जब बोलता तो उसकी धीमी लेकिन मीठी आवाज मानो कानों में रस-सा घोल देती थी। हर तरह से इतनी सपन्नता के बावजूद निराभिमानी, निर्व्यसनी और निर्झर की मानिंद साफ शुद्ध मन का धनी। वह पढ़ने में भी आउटस्टैंडिंग था। बचपन से लेकर चिकित्सा का मास्टर होने तक एक जैसा शैक्षणिक ट्रैक रिकॉर्ड। और अब अपने सुपर स्पेशलाइजेशन के कोर्स के लिए वह यहां है एम्स दिल्ली में। यहीं उसकी मुलाकात जान्हवी से हुई।

और जान्हवी? बिहार के सुदूर और अति पिछड़े इलाके में पली-बढ़ी। बचपन पूरी तरह अभावों और विपन्नता के असंख्य टापुओं के बीच गुजरा। इसी कारण मलेरिया और टाइफाइड जैसे साधारण बुखार के कारण अपने माता-पिता को बचपन में खो चुकी जान्हवी में लावण्य तो कहां से होता? फिर भी असीम मेधा के बल पर ही वह अपने अंतहीन संघर्षों से पार पाती रही। अपने माता-पिता को इलाज के अभाव में असमय खो देने से उसमें इस अद्‌भुत और अविश्सनीय संकल्पशति ने जन्म लिया कि वह डॉक्टर बनकर भविष्य में अपने इलाके में किसी को भी इलाज के अभाव में मरने नहीं देगी। लेकिन इस संकल्प में सबसे बड़ी बाधा था पैसा! पर जब हजार हाथ वाला देने लगे तो दो हाथ वालों से समेटते भी नहीं बनता। यही हुआ। एक

बार उसके स्कूल निरीक्षण के दौरान उसके मास्टर जी ने वहां एक कार्यक्रम में आए मंत्री जी और अधिकारियों को उसके अति मेधावी होने और उसके इस संकल्प के बारे में बताया तो मदद के हाथ बढ़ते गए और उसकी पढ़ाई की पूरी व्यवस्था होती चली गई। बड़ी उमीद से उसने एमबीबीएस करके अपने छोटे से कस्बे में अपना क्लीनिक खोल लिया। लेकिन उसे लगा कि एमबीबीएस के बाद भी वह अपना मिशन जारी तो रख लेगी पर उसका दायरा बहुत छोटा होगा। इस सेवा कार्य को और व्यापक बनाने का उद्देश्य लेकर ही एम्स दिल्ली का रुख किया था। इस तरह अलग-अलग शहरों के बाशिंदे जलेश और जान्हवी इस तीसरे शहर में आ मिले। प्रारभिक परिचय के बाद दोनों में सामान्य संबंध बने रहे। जैसे कि साथ पढ़ने या काम करने वालों के होते हैं। जान्हवी का अपने पढ़ाई के प्रति समर्पण अद्‌भुत था। उसकी ईश्वर द्वारा दी हुई बेजोड़ स्मरण शति, भी एक चमत्कार थी। एक बार जो बात वह सुन लेती थी, समझो उसके दिमाग की हार्ड डिस्क में हमेशा के लिए सेव हो जाती थी। एक बार शहर में महामारी फैल गई। छोटे-बड़े सभी अस्पतालों में मरीजों का तांता लगने लगा। इसी गहमागहमी में एक दिन जो हुआ, वह हर तरह से न केवल अनोखा था, बल्कि अनुकरणीय भी था। एक जवान बेटे के पिता उसको लेकर आए। बेटे को ब्लड कैंसर था और प्रथम दृष्टया ऐसा लग रहा था कि वह थोड़े ही दिनों का मेहमान है। उस समय वॉर्ड में जो ड्यूटी डॉक्टर मौजूद थे, उसे देखते ही इधर-उधर होने लगे। असहाय पिता की तमाम अनुनय विनय पर वे पिघले तो इलाज के लिए ब्लड की मांग की। 'कहीं से भी व्यवस्था करो ब्लड ला दोगे तो हम चढ़ा देंगे,' कहकर डॉक्टर्स ने अपनी ड्यूटी पूरी कर ली। मरीज का पिता बेचैन हो उठा। 'क्या करूं? कहां से लड लाऊं?' होते-होते यह चर्चा जान्हवी तक भी पहुंची। सारा माजरा समझ में आने पर उसने खुद ही ब्लड डोनेट करने की पेशकश की। 'रोजाना न सही, जब भी ऐसी कोई इमरजेंसी हो तो हम सहायता के लिए आगे नहीं आ सकते?' जान्हवी ने जिदपूर्वक ब्लड डोनेशन टेबल पर लेटते हुए कहा। जब वह ब्लड डोनेट कर चुकी, तब उसके चेहरे पर आत्मसंतुष्टि का जो भाव था वह व्यति के जीवन में यदाकदा ही आ पाता है। जलेश इस घटना के बाद जान्हवी की सेवा भावना का कायल हो गया। एक दिन कैंटीन में जान्हवी बैठी नाश्ता कर रही थी। तभी जलेश वहां आया और उसको जॉइन कर लिया। उसकी प्लेट में से एक पकौड़ा उठाते हुए बोला,'मैं भी तुहारे साथ कुछ बांटना चाहता हूं।' 'क्या?' जान्हवी ने अपना यह प्रश्न आंखों के माध्यम से पूछा। 'अपनी जिंदगी तुमसे शेयर करना चाहता हूं। शादी करनी है मुझे तुमसे,' वह बोला। '...हूं याल अच्छा है,' जान्हवी ने हंसते हुए कहा। 'यह हंसी में उड़ाने की बात नहीं है। आईएम सीरियस,' जलेश ने उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा। 'बट आई एम नॉट,' जान्हवी ने कहा और अपना हाथ खींच लिया। 'क्यों क्या कमी है मुझमें?' जलेश की आवाज में थोड़ा गुस्सा और आश्चर्य दोनों के ही भाव थे। 'नहीं कोई कमी नहीं है तुममें। मुझमें है। मैं अपने कस्बे और क्लीनिक को छोड़कर कहीं और नहीं जा सकती। मेरे लोग, मेरा और मेरे अस्पताल का इंतजार कर रहे हैं।' 'अस्पताल तो हम मुंबई में भी बना सकते हैं। तुम्हारे कस्बे के क्लीनिक और सपनों से भी बड़ा।' 'लेकिन वो मेरे कस्बे में नहीं होगा ना?' जान्हवी ने कहा और उठकर जाने लगी। 'रुको शादी न सही बात तो पूरी करो। बैठो प्लीज,' जलेश ने उसे रोका फिर अपनी पारिवारिक और आर्थिक पृष्ठभूमि विस्तार से बताई। उसे उम्मीद थी कि उसकी संपन्नता के आगे जान्हवी की आंखें चौंधियां जाएंगी। और वह फौरन हां कह देगी। 'जब हम दरिद्रनारायण थे तब भी दौलत की इतनी चाह नहीं थी, अब तो मेरी जरूरतों का मेरे पास है। इसलिए तुहारी सपन्नता मेरे लिए कोई मायने नहीं रखती।' जान्हवी ने सपाट लहजे में कहा। इन्हीं असहमतियों के बीच वे कई बार मिले। हर बार वही बातें दोहराई गईं। दोनों में से कोई भी दूसरे को सहमत नहीं कर सका। अब एस का कोर्स पूरा होने को है और वे सब अपने-अपने अगले पड़ावों को निकलने वाले हैं। काल के बहाव में आज जान्हवी के वापस अपने कस्बे जाने का

अवसर है। जलेश उसे छोड़ने आया है रेल्वे स्टेशन। यहां उसने फिर अपनी रिक्वेस्ट दोहराई। और जान्हवी ने अपनी वही असहमति। जलेश को कुछ सूझ नहीं रहा। उसका एक मन कह रहा है कि जान्हवी को ट्रेन से उतार ले। और एक मन कह रहा है कि वह खुद उसके सफर में उसके साथ हो ले। ट्रेन रेंगने लगी है। जलेश की आंखों में याचना के भाव हैं। वह बेमन से उतरने लगा जान्हवी ने उसका हाथ थाम लिया और कहा ''सफर में धूप तो होगी जो चल सको तो चलो...'' जलेश और जान्हवी ने पीछे छूटते प्लैटफार्म को देखा। प्लैटफार्म छोड़ते ही पूरी ट्रेन धूप से भर उठी।

शाह आलम कैम्प की रूहें

असगर वजाहत

शाह आलम कैम्प में दिन तो किसी न किसी तरह गुजर जाते हैं लेकिन रातें कयामत की होती है। ऐसी नफ्सा नफ्सी का अलम होता है कि अल्ला बचाये। इतनी आवाजे होती हैं कि कानपड़ी आवाज नहीं सुनाई देती, चीख-पुकार, शोर-गुल, रोना, चिल्लाना, आहें सिसकियां...

रात के वक्त रूहें अपने बाल-बच्चों से मिलने आती हैं। रूहें अपने यतीम बच्चों के सिरों पर हाथ फेरती हैं, उनकी सूनी आंखों में अपनी सूनी आंखें डालकर कुछ कहती हैं। बच्चों को सीने से लगा लेती हैं। जिंदा जलाये जाने से पहले जो उनकी जिगरदोज चीखों निकली थी वे पृष्ठभूमि में गूंजती रहती हैं। सारा कैम्प जब सो जाता है तो बच्चे जागते हैं, उन्हें इंतिजार रहता है अपनी मां को देखने का...अब्बा के साथ खाना खाने का। कैसे हो सिराज, अम्मां की रूह ने सिराज के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

'तुम कैसी हों अम्मां?'

मां खुश नजर आ रही थी बोली सिराज...अब...मैं रूह हूं...अब मुझे कोई जला नहीं सकता। अम्मां. . .क्या मैं भी तुम्हारी तरह हो सकता हूं?'

शाह आलम कैम्प में आधी रात के बाद एक औरत की घबराई बौखलाई रूह पहुंची जो अपने बच्चे को तलाश कर रही थी। उसका बच्चा न उस दुनिया में था न वह कैम्प में था। बच्चे की मां का कलेजा फटा जाता था। दूसरी औरतों की रूहें भी इस औरत के साथ बच्चे को तलाश करने लगी। उन सबने मिलकर कैम्प छान मारा...मोहल्ले गयीं...घर धूं-धूं करके जल रहे थे। चूंकि वे रूहें थीं इसलिए जलते हुए मकानों के अंदर घुस गयीं....कोना-कोना छान मारा लेकिन बच्चा न मिला।

आखिर सभी औरतों की रूहें दंगाइयों के पास गयी। वे कल के लिए पेट्रौल बम बना रहे थे। बंदूकें साफ कर रहे थे। हथियार चमका रहे थे।

बच्चे की मां ने उनसे अपने बच्चे के बारे में पूछा तो वे हंसने लगे और बोले, अरे पगली औरत, जब दस-दस बीस-बीस लोगों को एक साथ जलाया जाता है तो एक बच्चे का हिसाब कौन रखता है? पड़ा होगा किसी राख के ढेर में।

मां ने कहा, नहीं, नहीं मैंने हर जगह देख लिया है...कहीं नहीं मिला।

तब किसी दंगाई ने कहा, अरे ये उस बच्चे की मां तो नहीं है जिसे हम त्रिशूल पर टांग आये हैं।

शाह आलम कैम्प में आधी रात के बाद रूहें आती हैं। रूहें अपने बच्चों के लिए स्वर्ग से खाना लाती है।, पानी लाती हैं, दवाएं लाती हैं और बच्चों को देती हैं। यही वजह है कि शाह कैम्प में न तो कोई बच्चा नंगा भूखा रहता है और न बीमार। यही वजह है कि शाह आलम कैम्प बहुत मशहूर हो गया है। दूर-दूर मुल्कों में उसका नाम है।

रघुकलश के संभागीय ब्यूरो प्रमुख

सामाजिक बंधु रघुकलश में रचनाएं और सामाजिक समाचार, ग्राहक बनने एवं विज्ञापन के लिए संभागीय ब्यूरो प्रमुखों से संपर्क कर सकते हैं। उनके नाम और फोन नम्बर इस प्रकार हैं-

ग्वालियर-चंबल संभाग ब्यूरो प्रमुख : ओमवीर सिंह रघुवंशी, मो.09893247389, 09171582598

इंदौर ब्यूरो प्रमुख : राजेश रघुवंशी, मो. 09826578006, रणवीर सिंह रघुवंशी मो. 08959811503, 09522222841

उज्जैन ब्यूरो प्रमुख : चैन सिंह रघुवंशी, मो.09685574723

खानदेश ब्यूरो प्रमुख : डॉ. महेन्द्र जयपाल सिंह रघुवंशी, नंदूरबार महा. मो. 09423942750

विदर्भ ब्यूरो प्रमुख : दिलीप सिंह रघुवंशी, मो. 08485031185, 09960129404

धूलिया ब्यूरो प्रमुख : आलोक विजय सिंह रघुवंशी, धूलिया महा. मो. 09421991991

अकोला ब्यूरो प्रमुख: संजय रघुजीत सिंह रघुवंशी, मो. 09850509244

अहमदनगर ब्यूरो प्रमुख : पी.एम. रघुवंशी, मो. 09922079523, 09637081936

दिल्ली से एक बड़े नेता जब शाह आलम कैम्प के दौरे पर गये तो बहुत खुश हो गये और बोले, ये तो बहुत बढ़िया जगह है...यहां तो देश के सभी मुसलमान बच्चों को पहुंचा देना चाहिए।

शाह आलम कैम्प में आधी रात के बाद रूहें आती हैं। रात भर बच्चों के साथ रहती हैं, उन्हें निहारती हैं...उनके भविष्य के बारे में सोचती हैं। उनसे बातचीत करती हैं।

सिराज अब तुम घर चले जाओ, मां की रूह ने सिराज से कहा।

घर? सिराज सहम गया। उसके चेहरे पर मौत की परछाइयां नाचने लगीं।

हां, यहां कब तक रहोगे? मैं रोज रात में तुम्हारे पास आया करूंगी।

नहीं मैं घर नहीं जाउंगा...कभी नहीं...कभी, धुआं, आग, चीखों, शोर।

अम्मां मैं तुम्हारे और अब्बू के साथ रहूंगा।

तुम हमारे साथ कैसे रह सकते हो सिक्कू...।

भाईजान और आपा भी तो रहते हैं न तुम्हारे साथ।

उन्हें भी तो हम लोगों के साथ जला दिया गया था न।

तब...तब तो मैं...घर चला जाऊंगा अम्मां।

शाह आलम कैम्प में आधी रात के बाद एक बच्चे की रूह आती है...बच्चा रात में चमकता हुआ जुगनू जैसा लगता है...इधर-उधर उड़ता फिरता है...पूरे कैम्प में दौड़ा-दौड़ा फिरता है...उछलता-कूदता है...शरारतें करता है...तुतलाता नहीं...साफ-साफ बोलता है...मां के कपड़ों से लिपटा रहता है...बाप की उंगली पकड़े रहता है।

शाह आलम कैम्प के दूसरे बच्चे से अलग यह बच्चा बहुत खुश रहता है।

तुम इतने खुश क्यों हो बच्चे?

तुम्हें नहीं मालूम...ये तो सब जानते हैं।

क्या?

यही कि मैं सुबूत हूं।

सुबूत? किसका सुबूत?

बहादुरी का सुबूत हूं।

किसकी बहादुरी का सुबूत हो?

उनकी जिन्होंने मेरी मां का पेट फाड़कर मुझे निकाला था और मेरे दो टुकड़े कर दिए थे।

शाह आलम कैम्प में आधी रात के बाद रूहें आती हैं।

एक लड़के के पास उसकी मां की रूह आयी। लड़का देखकर हैरान हो गया।

मां तुम आज इतनी खुश क्यों हो?

सिराज मैं आज जन्नत में तुम्हारे दादा से मिली थी, उन्होंने मुझे अपने अब्बा से मिलवाया...उन्होंने अपने दादा...से...सकड़ दादा...तुम्हारे नगड़ दादा से मैं मिली। मां की आवाज़ से खुशी फटी पड़ रही थी। सिराज तुम्हारे नगड़ दादा...हिंदू थे...हिंदू...समझे? सिराज ये बात सबको बता देना...समझे?

शाह आलम कैम्प में आधी रात के बाद रूहें आती हैं। एक बहन की रूह आयी। रूह अपने भाई को तलाश कर रही थी। तलाश करते-करते रूह को उसका भाई सीढ़ियों पर बैठा दिखाई दे गया। बहन की रूह खुश हो गयी वह झपट कर भाई के पास पहुंची और बोली, भइया, भाई ने सुनकर भी अनसुना कर दिया। वह पत्थर की मूर्ति की तरह बैठा रहा।

बहन ने फिर कहा, सुनो भइया!

भाई ने फिर नहीं सुना, न बहन की तरफ देखा।

तुम मेरी बात क्यों नहीं सुन रहे भइया!, बहन ने जोर से कहा और भाई का चेहरा आग की तरह सुर्ख हो गया। उसकी आंखें उबलने लगीं। वह झपटकर उठा और बहन को बुरी तरह पीटने लगा। लोग जमा हो गये। किसी ने लड़की से पूछा कि उसने ऐसा क्या कह दिया था कि भाई उसे पीटने लगा...

बहन ने कहा, नहीं सलीमा नहीं, तुमने इतनी बड़ी गलती क्यों की। बुज़ुर्ग फट-फटकर रोने लगा और भाई अपना सिर दीवार पर पटकने लगा।

शाह आलम कैम्प में आधी रात के बाद रूहें आती हैं। एक दिन दूसरी रूहों के साथ एक बूढ़े की रूह भी शाह आलम कैम्प में आ गयी। बूढ़ा नंगे बदन था। उंची धोती बांधे था, पैरों में चप्पल थी और हाथ में एक बांस का डण्डा था, धोती में उसने कहीं घड़ी खोंसी हुई थी।

रूहों ने बूढ़े से पूछा क्या तुम्हारा भी कोई रिश्तेदार कैम्प में है?

बूढ़े ने कहा, नहीं और हां।

रूहों के बूढ़े को पागल रूह समझकर छोड़ दिया और वह कैम्प का चक्कर लगाने लगा।

किसी ने बूढ़े से पूछा, बाबा तुम किसे तलाश कर रहे हो?

बूढ़े ने कहा, ऐसे लोगों को जो मेरी हत्या कर सके।

क्यों?

मुझे आज से पचास साल पहले गोली मार कर मार डाला गया था। अब मैं चाहता हूं कि दंगाई मुझे ज़िंदा जला कर मार डालें।

तुम ये क्यों करना चाहते हो बाबा?

सिर्फ ये बताने के लिए कि न उनके गोली मार कर मारने से मैं मरा था और न उनके जिंदा जला देने से मरूंगा।

शाह आलम कैम्प में एक रूह से किसी नेता ने पूछा

तुम्हारे मां-बाप हैं?

मार दिया सबको।

भाई बहन?

नहीं हैं।

कोई है। नहीं।

यहां आराम से हो?

हो हैं।

खाना-वाना मिलता है?

हां मिलता है।

कपड़े-वपड़े हैं?

हां हैं।

कुछ चाहिए तो नहीं, कुछ नहीं।

कुछ नहीं। कुछ नहीं।

नेता जी खुश हो गये। सोचा लड़का समझदार है। मुसलमानों जैसा नहीं है। शाह आलम कैम्प में आधी रात के बाद रूहें आती हैं। एक दिन रूहों के साथ शैतान की रूह भी चली आई। इधर-उधर देखकर शैतान बड़ा शरमाया और झेंपा। लोगों से आंखें नहीं मिला पर रहा था। कन्नी काटता था। रास्ता बदल लेता था। गर्दन झुकाए तेज़ी से उधर मुड़ जाता था जिधर लोग नहीं होते थे। आखिरकार लोगों ने उसे पकड़ ही लिया। वह वास्तव में लज्जित होकर बोला, अब ये जो कुछ हुआ है...इसमें मेरा कोई हाथ नहीं है...अल्लाह कसम मेरा हाथ नहीं है। लोगों ने कहा, हां...हां हम जानते हैं। आप ऐसा कर ही नहीं सकते। आपका भी आखिर एक स्टैण्डर्ड है।

शैतान ठण्डी सांस लेकर बोला, चलो दिल से एक बोझ उतर गया...आप लोग सच्चाई जानते हैं। लोगों ने कहा, कुछ दिन पहले अल्लाह मियां भी आये थे और यही कह रहे थे।

भत्ता

संतोष मांझी

टी गंदी कमीज, सीवन उधड़ी एक तरफ लटकी जा रही ढीली चीक्कट निकर को एक हाथ से बार-बार ऊपर खींचता, दूसरे हाथ की मुट्ठी में रुपये थामे, उसी हाथ से कभी आंसू, कभी नाक पोंछता दामू होटल के खंभे से आधे घंटे से टिक कर खड़ा था। उसकी रोने की ऊं..ऊं गूंज बीच-बीच में वह जब कुर्ते की बांह से नाक पोंछत तो थोड़ी देर को थम जाती। उधर होटल के मालिक की बड़बड़ाहट जारी थी। वह ग्राहकों तक चाय, नाश्ता, पानी के साथ-साथ अपनी बात भी पहुंचाता जा रहा था, 'बताइए साहब, यानि आप ही बताइए...हम करें तो का करें? हमारी हालत तो सांप का मुंह में छिपकिल्ली जैसी हुई गई, निगलें तो कोढ़ी, उगलें को कलंकी , हम दुकानदार आखिर का करें?' सरकार तो हमरी ऐसी-तैसी कर रही है कि नईं? अब ई ससुरा इहां से टलने का नाम नहीं ले रहा है।' दामू फिर चिल्लाता। अरे जा न मेरे बाप, हमरी जान छोड़, जां इहां से, कोनों की मैयत में रहा रो रहा है ससुरे, भाग इहां से, नई तो जमाता हूं दुई झापड़...। दामू ने साहस बंटोरा, खंभे के पास ही खड़े-खड़े चिल्लाकर रोते हुए बोला, हम का गलती किए, जे तो बताओ? हमरा बाप तो हमरी ही हडडी तोड़ेगा न? हम तो कोनो गड़बड़ी नहीं किए हैं, काहे हमका काम से निकार? ऊं ऊं ऊं...। वह जोर-जोर से रोने लगा।

होटल से लगे ठेले पर मोटर साइकिल पर पांव धरे छुट भैये नेता जादवराम ने पान चबाते, पान के डंठल से थोड़ा सा चूना चखते दामू की बात सुनी तो पूछा, काहे रो-रो के हलकान हो रहा है रे? उसने दामू के पास आकर पुचकारा। हमदर्दी पाकर दामू और जोर से रोने लगा। शिकायती स्वर में बोला, देखो न बाबू साहब, ई सेठ हमका काम से निकार दिए। चोरी-ओरी किया होगा तू, तभी निकारे हैं? नहीं नहीं, हम चोर नहीं हैं। पूछ लो सेठ से...। क्या सेठ, ई का कह रहा है? काहे निकारा इसको? पैसा-कौड़ी भी दिया कि नहीं? सेठ लपक कर दौड़ा। सलाम नेता जी, आइए-आइए, गरम-गरम चाय...। मुंह में अभी पान है, चाय बाद में...ई लड़का तो अच्छे से काम करता था तुमारे हियां...फिर का हुआ कि निकार दिए? सेठन घिघियाया, पूरा हिसाब से पैइसा दे दिया। देख लीजिए, ओ अभी भी मुटठी में पैसा धरा होगा। अरे आप कुर्सी तो लीजिए, जरा बैठिए। आप ही लोगन का आदेश है। तब तक जादवराम कुर्सी पर विराज गए थे। हाँ, अब कहो, का हुआ है? सेठ ने अचरज से कहा, आप हमसे पूछ रहे हैं भैया जी...हम तो मजबूरी में निकारे हैं इसको। आप ही का आदेश पूरा करने में लगे हैं। इन छोटे लड़िकन से काम कराके हमका छै महीना वास्ते जेल थोड़े ही जाना है। हाँ...सरकारी आदेश हुआ है, बच्चों से काम करवाओगे तो जेल के साथ-साथ जुर्माना भी भरना होगा, भैया जी पान चबाते बोले। ओही बात तो समझा रहे हैं हम इस छोकरे को, पर ई है कि मानता ही नहीं...फालूत रो-रो के परीशान कर रहा है हमका। फिर भेद भरे स्वर में धीमे से बोला, बहुत काम का लड़का है भैया जी, काम में फुर्तीला, एकदम बिजरी है, बिजरी। इसको निकारने से हमरा तो घाटा ही है। भैया जी सोच में पड़ गए, हाँ, बच्चा लोग को पैसा भी कम देना पड़ता है। खाना भी कमती खाते हैं। है न? मक्खन लगाते दांत निपोर कर सेठ बोला, आप एकदम सही समझे, फुसफुसा कर जरा कुर्सी के पास झुककर बोला, अभी कोई आदमी रखूंगा...पैसा इससे तीन गुना लेगा। खाना इससे चार गुना जियादा खाएगा। मरवाय दिया ई सरकारी आडर ने हमका तो...का कहे? भैया जी कुछ और ही गुण भाग लगाने में लगे थे। पानवाला पान बनाते हुए बोला, भैया जी पढ़े-लिखे बेरोजगारों को भत्ता मिलता है। बेसहारा बूढ़ों को भी दे रही है सरकार, वैसे ही इन बच्चों से अगर काम नहीं करवाना है तो कुछ इनको भी तो भत्ते जैसा सरकार से मिलना चाहिए कि नहीं? विदेश में तो ऐसा ही होता है। उहां बच्चे

सरकार की जिम्मेदारी हैं। हम कोशिश कर रहे हैं, सीएम से भी हमारी बात हुई है। यहां भी हो जाएगए एक दिन ऐसा....। कह कर भैया जी ने गर्व से गरदन तानकर चारों ओर निरीक्षण किया। तब तो समझिए रामराज ही आ जाएगा। जादवराम भैया जी की...। पानवाले सहित तीन चार आवाज आईं, जय। सेठ ने पानी का गिलास भैया जी की ओर बढ़ाया। भैया जी ने वाश बेसिन में कुल्ला करके पान थूका। तब तक सेठ ने गरम-गरम समोसे की प्लेट और चाय लाकर उनके सामने रख दी। एक प्लेट समोसा, चाय लड़के को भी दो। फोकट की दरियादिली दिखाते भैया जी बोले। सेठ ने एक बार भैया जी की ओर देखा, फिर दामू को अंदर आने का इशारा किया। उसे कागज में एक समोसा और कांच के गिलास में चाय थमा दी। तेरा घर कहां है रे? समोसे पर हाथ साफ करते भैया जी ने पूछा। दामू ने हड़बड़ी में मुंह का ग्रास निगलते हुए कहा, नहर के पिछवाड़े में झोंपड़ा है।

बाप का काम करता है? रिक्शा चलाता है। जा घर जा अब...कल एही बख्त आना, इहां मेरी राह देखना। तेरे को काम मिल जाएगा...जा, अब घर जा...। जल्दी-जल्दी चाय खतम कर दामू भागा घर की ओर। भैया जी चाय खतमक कर फिर पान ठेले पर जा खड़े हुए। सेठ मुंह तिरछा कर बड़बड़ाया, साला मुफ्तखोर...। एक हाथ से ढीली नीकर थामे, दूसरे हाथ में कस कर रुपये पकड़े जब दामू नहर के पास पहुंचा, देखा सामने उसके साथी मंगू और हरिया मुंह लटकाए चले आ रहे हैं। तीनों एक-दूसरे को देख समझ गए कि क्या हुआ होगा। हरिया जरूर थोड़ा खुश था, चल अब अपन मस्त कंचे खेलेंगे। साला काम करके जिनगी खराब हुई गई। साथ ही उसके मुंह से भद्दी मां की गाली निकली। कंचे खेलेंगे...। दामू हाथ-पांव तोड़ेगा तब? भाग जाऊँगा एक दिन...देखना। खुद तो हरामी दारू पी के उस छिनाल के साथ घर बैठे मस्तियाता रहता है...हमको सुबो पांच बजे उठाकर दारू भटटी भेज देता है कमाने....। रोने लगता है।

छोड़ तो सब, बता भटटी वाला कुछू पैसा-वैसा दिया कि खाली हाथ भगा दिया? 'सालभर से कमा रहा हूं, कभी एक पैसा नहीं दिया। वो हरामी...मेरे पगार से दारू पी लेता है। ...मां रहती तो...' रोता रहता है। 'चला जा न अपनी मां के पास। इहां मरने-खपने से तो अच्छा है उहां बढ़िया से...' 'अरे यार, उहां भी मेरा जान का बवाल है। उसका मरद मेरे से चिढ़ता है...ओ ही बोली, इसका मार खाने से अच्छा है, अपना बाप के पास चला जा।' तीनों उदास से नाले में बनी पुलिया पर बैठ गए। नाले के उस पा उनकी झोंपड़ियां थीं, गंधाती, मच्छर, मक्खी और धुएं से भरी झोंपड़ियां। इस गंदे नाले की गंदगी हवा में बदबू बनकर बसाती रहती हैं, पर नाले के कारण ही गर्मियों में थोड़ी ठंडी हवा भी राहत दे जाती। उसी नाले कि किनारे सुबह-शाम प्लास्टिक के डिब्बे-बोतलें लिये औरत, मर्द, बच्चे फारिग होते नजर आते। 'आज एक नया बात पता चला है। ओ पानवाला और टोपीवाले नेता बात कर रहे थे। पढ़े-लिखे लड़कों को जब तक नौकरी नहीं मिलती, सरकार कोई भत्ता देती है। बूढों को भी पैसा देती है। वैसा बच्चों को भी मिलेगा। बोल रहे थे, गोरे अंग्रेजी देश में बच्चे को मिलता है।' हरिया और मंगू एकदम खुश हो गए, 'ए दामू, ओ नेता को बोल के हमका भी ऊ भत्ता दिला देना रे। हरिया तो हम सबसे जियादा परीशान है,' मंगू गिड़गिड़ा कर बोला। 'हम तेरे दोस्त हैं न रे...हमरे लिये भी बोलना दामू। थोड़ा ढंग से रहेंगे...मैं तो पढ़ना चाहता हूं...कितना बढ़िया लगता है। एकदम कड़क झकाझक कपड़ा पहिर कर, पानी का बोतल लटकाकर इस्कूल जाना...' हरिया जैसे सपना देख रहा हो। 'ओ भैया जी जब-जब होटल में आवे, मैं हमेशा उनको सलाम करता था और दौड़-दौड़ कर चाय, पानी, नाश्ता खिलाता था। ओ मेरे को बहोत मानते हैं। आज मेरे लिये सेठ जी को भी खूब डांटे। मैं तुम दूनों का नाम उनके पास लिखा दूंगा।' 'सच्ची लिखाएगा न हम दूनों का नाम?' 'एकदम सच्च...' दामू गर्व से बोला। 'तब बताऊंगा अपने बाप की पतुरिया को और अपनी मां के उस हरामी मरद को...' आंखों में सपने बुनते तीनों अपने घर की ओर चल दिए। दामू ने देखा, मां आज बिस्तर से उठी है। सिर पे हाथ धरे बकरी के पास बैठी है। पानी भरने जाती कुछ पड़ोसिनें पीतल की गुंडी लिये वहां खड़ी हैं। वह खुश हो गया। बकरी ने बच्चे दिए होंगे। उसे बहुत अच्छे लगते हैं छोटे-छोटे हिरण की तरह कुलांचे भरते बकरी के बच्चे। मां बीमार हैं, अब उसे थोड़ा दूध पीने को मिल जाएगा। पास जाकर देखा, दो बच्चे मरे पड़े हैं। एक भूरा बच्चा खड़े होने की कोशिश कर रहा है। बकरी उसे लगातार चाटे जा रही है। मां ने उसे देखा, 'आज इत्ती बेर?' 'अंदर चल बताता हूं' उसने सारी कहानी मां को बताई। 'पर अब घर कडसे चली बचवा?' ई को तो अब कहूं काम करे नहीं भेजेंगे, मां ने जानकी की तरफ इशारा कर कहा। 'काहे

नहीं? पांच सौ रुपिया पगार देते हैं ओका, कपड़ा-लत्ता अलग से,' दामू बोला।'तू नाही समझेगा, तोहर बहिनी अब बड़ी हो गई है। लोग आजकल बहुत खराब हैं।' दामू ने देखा, मां थकी-सी थी। दामू को याद है, जानकी कोठी में काम पर जाने से कई दिनों से मना कर रही थी। दामू उसे कामचोर कहके चिढ़ाता था। एक दिन वह दोपहर को ही लौट आई। खूब रो रही थी जानकी। कई रोज बुखार में पड़ी रही। तब से मां और बापू ने उसका काम छुड़ा दिया। कई दिनों तक उसकी मालकिन फल, कपड़े, रुपये दे-देकर कर जाती रही। मां के आगे हाथ जोड़ती रही। कुछ शब्द दामू के काम में भी पड़े। पर उसे कुछ समझ में नहीं आया...। बच्चा है माफ कर दो, उसकी जिंदगी बरबाद मत करना... किसी से मत कहना। जेल, यौन शोषण, सेक्स और भी पता नहीं क्या-क्या कहती रही। छोटे मालिक को विदेश भेजने की बात हो रही थी। तब से जानकी घर से बाहर नहीं निकलती। किसी से बात नहीं करती। चुपचाप घर का काम करती, हमेशा उदास और डरी-डरी रहती है। दामू के लिये यह सब पहेली जैसा है। मां-बाबू जानकी को लेकर धीरे-धीरे कुछ बात करते रहते हैं। दूसरे दिन सात बजे से दामू होटल और पान ठेले के आसपास डोलता रहा। मंगू और हरिया भी साथ आना चाहते थे पर उसने टाल दिया, अभी नहीं, पहले भैया जी से हम मिलेंगे, फिर उनको बताएंगे तुम्हारा नाम। ग्यारह बजे भैया जी पान खाने पहुंचे। दामू ने लपककर सलाम ठोंका। पान खाकर भैया जी ने मोटर साइकिल स्टार्ट कर दामू को पीछे बैठने का इशारा किया। दामू जैसे निहाल हो गया। दौड़कर चढ़ गया मोटर साइकिल पर। घूमते-घुमाते भैया जी उसे लेकर अपने फार्म हाउस जैसे घर में पहुंचे। घर में सबको बुलाकर चेताया, ई रामू है, आज से इस घर में वैसे ही रहेगा जैसे बाकी लोग रहते हैं। मतलब ईको नौकर मत समझना। ई नौकर नहीं, बिटवा बन के आया है। समझे सब के सब? ई नौकर नहीं है। जो हम खाते हैं, ई भी ओही खाएगा। बाजार से बढ़िया दो जोड़ी कपड़ा मंगवाओ ईके लिये। कुछ कपड़ा अपने भइया का पहिर लेगा। उन्होंने एक बिगड़ैले-से लड़के की ओर इशारा किया। सबने सुना। भैया जी को जीजीजी कह कर बुलाने वाले बाइस-चौबीस साल के एक युवक ने दामू के लिये कपड़े, जूते, घर में पहनने की चप्पल का इंतजाम कर दिया। सुगंधित तेल, साबुन, कंघी के साथ-साथ एक खाट उस बिगड़ैल बच्चे के कमरे में रात को उसके लिये भी लगा दी जाती, जिसका नाम रमेश था। रमेश के कपड़े जो छोटे हो गए थे, वे भी दामू को मिल गए। सारे कपड़े खूब अच्छे थे। नए फैशन के। एकदम नए लगते थे। दामू पहनकर खिल गया। वह खुद को ही पहचान नहीं पा रहा था। धीरे-धीरे दामू उस घर के सदस्य जैसा ही हो गया। बेटा दमन, खाना खा लिये तो सिंक में पड़े बर्तन भी साफ करके रख देना, मालकिन कहती। जी मम्मी, दामू दमन सिंह बनकर प्रसन्न था। दमन नहाने जा रहे हो तो बाथरूम में दो-चार कपड़े हैं वह भी धो देना। वह सब खुशी-खुशी कर देता। घर की साफ-सफाई, बर्तन, कपड़े सब करके भी वह खुश था। जब-जब घर जाता, उसका खिला-खिला रंग-रूप देख घर में सब खुश हो जाते, पर उसे अब उस झोंपड़े में नींद नहीं आती थी।

एक महीने बाद पांच सौ रुपये भैया जी ने उसे दिए...ले, घर दे आना, पर शाम को जाना और सुबह लौट आना। सुबह तेरे हाथ की चाय पीकर ही मेरी नींद खुलती है। दामू गदगद हो गया, भैया जी मेरे दोस्त हैं, मंगू और हरिया उनको भी...मेरी तरह कहीं ऐसा ही बच्चों वाला भत्ता दिलवा देना। बेचारे बड़े परेशान हैं। भैया जी पहले चौंके, फिर उन्हें याद आया...हाँ-हाँ, क्या नहीं, मैं कोशिश करूंगा...उनको भी तुम्हारी तरह सरकारी भत्ता लगवा दूंगा। दामू ने फगनू के हाथ में पांच सौ का कड़कता नोट रखा तो सब खुश हो गए। मंगू और हरिया को भी वह खुशखबरी दे आया। जल्दी ही उन्हें भी सरकारी भत्ता मिलने लगेगा। सुबह छह बजे दामू को फगनू रिक्शा में छोड़कर चला गया। दामू ने देखा, सब कहीं जाने की हड़बड़ी में हैं। मालकिन ने दामू को तत्परता से समझाया, रमेश और बेबी सोए हैं। उठें तो चाय-नाश्ता दे देना। घर का ध्यान रखना। रधिया खाना बना जाए तो दरवाजा ठीक से बंद कर लेना। रमेश को स्कूल बस तक छोड़ देना, शाम को फिर ले आना। हम लोग कल आएंगे। परिवार में मैय्यत हो गई...। भैया जी ने कहा। सबके जाने के बाद घर पर दामू का एकछत्र राज था। रधिया खाना बना गई। रमेश को स्कूल बस तक छोड़ आया। बेबी के बारहवीं के पेपर थे। वह अपने कमरे में पढ़ती रही। दोपहर को बेबी की पीठ मलने लगा। पीठ से गरदन तक मलता रहा। बेबी सिसकरियां भरती रही। दमन ने सोचा, दर्द ज्यादा है, वह और जोर-जोर से मलने लगा। थोड़ी देर बाद बेबी वहीं सोफे पर सो गई। रात सारे गेट-दरवाजे अच्छी तरह बंद कर दामू

अपने कमरे की ओर बढ़ा। रमेश पहले ही सो चुका था। बेबी ने दामू को पुकारा...दामू जब बेबी के कमरे में पहुंचा तो जीरो पावर की नीली रोशनी में बेबी स्कर्ट पहने पलंग पर पांव लटकाए बैठी थी। दमन जरा पांव दबा दे तो। दमन खुशी-खुशी जमीन पर बैठ पांव से लेकर पिंडलियों तक दबाता रहा। थोड़ा और ऊपर...। अब दमन को पहली बार कुछ अजीब-सा अहसास हुआ। बारह-तेरह साल का दमन कुछ समझ नहीं पा रहा था। बेबी के शरीर से उठती भीनी-भीनी खुशबू में डूबा वह बेबी के कहे अनुसार और सहला रहा था। बेबी ऐंठती जा रही थी। अब नीली रोशनी बंद थी। अचानक बेबी ने उसका हाथ झटका, बस अब जा...। दमन झटके के साथ रुक गया। एक अजीब से एहसास में डूबा वह अपने बिस्तर पर पड़ा रहा। वह नहीं समझ पाया, यह सब क्या है? क्यों है? उसे कुछ अच्छा सा लग रहा था। सुबह-सुबह गाड़ियां आकर रुकीं। सब लौट आए थे। जब-जब भी एकांत मिलता बेबी दामू को कभी पैर, कभी पीठ दबाने बुला लेती। चोरी-छिपे बुलाने के कारण दामू डरा-सहमा सा रहने लगा। उसमें कुछ अजीब-सा घटने लगा था। भैया जी और मालकिन का उसके प्रति स्नेह और विश्वास दिन पर दिन बढ़ता जा रहा था। दामू के बिना उस घर का कोई काम नहीं होता। जिस दिन रधिया छुटटी पर जाती, दामू सबको वैसा ही बढ़िया खाना बनाकर खिला देता।

सुबह से लेकर रात तक कभी दमन, कभी दमन सिंह की पुकार पूरे घर में गूंजती रहती। त्यौहार में उसके लिये भी कपड़े और उपहार आते। अच्छे खानपान और सम्मान से उसका चेहरा निखरने लगा था। शरीर भी भर गया था। दो सूमो भरकर सारा परिवार शादी में रीवा गया। इस बार दामू और भैया जी का साला गोपाल घर की रखवाली में रह गए। रधिया खाना बनाती, माली बगीचा सहेजता। बाकी घर की साफ-सफाई, बर्तन, कपड़े धोना सब दमन करता। गोपाल अपने दोस्त के साथ अपने कमरे में बैठा गप्प मारते हुए टीवी देख रहा था। बीच-बीच में फ्रिज की बर्फ की ट्रे निकालकर ले जाता। दामू इतना तो समझ गया कि कमरे के अंदर गोपाल भैया अपने दोस्त के साथ बैठे दारू पी रहे हैं। गोपाल ने दामू को आमलेट बनाकर लाने के लिये कहा। दामू ने चार अंडे फेंटकर आमलेट बनाया। सलाद तैयार किया, फिर दरवाजा खटखटाया। दरवाजा केवल उढ़का हुआ था, हाथ लगते ही खुल गया। वह अंदर गया उसे टीवी में कुछ अजीब हरकतें नजर आईं। गोपाल और उसका दोस्त हंसने लगे। ये कैसा सिनेमा है? छी: छी:। गंदा...दामू टेबल पर आमलेट और सलाद रखकर तेजी से बाहर जाने के लिये पलटा। अरे सुन-सुन, जा कहां रहा है? गोपाल के दोस्त ने दामू का हाथ पकड़कर खींचा। गोपाल और उसके दोस्त के हावभाव और चेहरे पर उभरी बदहवासी में दामू को किसी खतरे का सा आभास हुआ। दोनों के चेहरे विकृत हो गए थे। नशे से बोझिल होती उनकी लाल आंखें, लड़खड़ाती चाल और जबान से वह बुरी तरह भयभीत हो गया। एक पल में ही उसने सब सोच लिया। एक मिनट भैया जी, वो रधिया जा रही है, जरा दरवाजा बंद कर दूं। एक झटके में दामू का हाथ मुक्त हो गया। दरवाजा बंद करने के बहाने वह तेजी से दरवाजे की ओर बढ़ा और बेतहाशा भागने लगा। भागते-भागते वह सोचता भी जा रहा था, कहां जाऊं, किसको बताऊं। बड़े लोग हैं, पकड़कर मारेंगे...भत्ता लेता हूं तो शायद जेल में भी डाल सकते होंगे...पर अभी ये दोनों नशे में धुन हैं, मेरे पीछे नहीं आ सकते। बड़े भैया जी दो दिन बाद आने वाले हैं, तब तक?...नहीं...नहीं में अब वहां नहीं जाऊँगा। वो...वो उस बेबी के कारण भी किसी दिन ये लोग मुझे जान से ही मार देंगे....अपनी उस बेबी को कुछ नहीं कहेंगे...साली गंदी लड़की...फिर कहां जाऊं? कहां...। सोचते-सोचते वह एक पेड़ की छांह तले पलभर को रुक गया। उसकी सांस धौंकनी-सी चल रही थी। गला प्यास के कारण सूख रहा था। उसने पानी की तलाश में आसपास नजर दौड़ाई। सामने से आ रहे एक ट्रक की खिड़की से छोटा-सा हाथ हिला। किसी ने पुकारा दामू, ओ दामू, ट्रक की रफ्तार कम हुई। हरिया ने ड्राइवर के बाजू का गेट खोल गरदन निकाली, दिल्ली जा रिया हूं बे। ड्रेवर साब ने उहां नौकरी दई है। सरकारी भत्ता? दामू ने चौंक कर ड्राइवर को कनखियों से देखा। उसे ड्राइवर का चेहरा कभी भैया जी जैसा, तो कभी गोपाल और उसके दोस्त जैसा नजर आने लगा। रात को ट्रक ढाबे पर रुका। ड्राइवर और क्लीनर के साथ दामू के डाले पर चढ़ गए सोने के लिये।

सुबह-सुबह चाय-पानी और फारिग होने के लिये ट्रक फिर एक ढाबे पर रुका। क्लीनर ने दामू और हरिया को आवाज लगाई। कई आवाजें लगाने के बाद उसने डाले में झांका। वहां कोई नहीं था। रात को खाना खाने के बाद जब ढाबे से ट्रक चला, तभी दोनों ट्रक से कूद कर भाग चुके थे।

खुशबू

रेनू मंडल

छले कई दिनों से वह सुबह-शाम उसके रूम के चक्कर लगा रहा था। वह आता, ख़ामोशी

से उसे कुछ पल निहारता और चला जाता। करीब 34-35 वर्ष का होगा वह। चेहरे पर सौयता और आंखों में गजब का आकर्षण। क्यों आता है वह उसके रूम में? पूछेगी आज वह उससे। या वह उससे परिचित है? किंतु वह तो नहीं जानती उसे। फिर कौन है वह और क्या चाहता है? किंतु आज तो वह अभी तक आया ही नहीं है। रोज सुबह 11 बजते ही वह उसके रूम में होता है, किंतु आज तो 12 बज गए हैं और वह अभी तक आया नहीं है। कहीं उसकी तबीयत तो खराब नहीं हो गई या फिर कोई अन्य अप्रिय घटना... नहीं नहीं, मन ही मन वह सिहर उठी। क्या करे वह, किससे पूछे? क्या नर्स से पूछना उचित होगा? मन में उसके

कशमकश चल रही थी कि अचानक वह उसके रूम में दाखिल हुआ तो उसने राहत की एक गहरी सांस ली। वह चेयर खींचकर उसके करीब आ बैठा और उसे देख मुस्कुराया,''हैलो, आज तुहारी तबीयत बेटर लग रही है। आज मैं आने में लेट हो गया। मेरा इंतजार कर रही थीं न तुम,'' बेतकल्लफी से उसने पूछा और न चाहते हुए भी सहमति में उसकी गरदन हिल गई।''मेरा नाम रजत है। इसी हॉस्पिटल में रूम नंबर 108 में एडमिट हूं। और तुम?''''मैं रिया,'' बेसाता उसके मुंह से निकला फिर वह तुरंत संभल गई और बोली,''इस हॉस्पिटल में बहुत पेशेन्ट्स एडमिट होंगे। हर किसी को कोई न कोई तकलीफ होगी। आप या हर एक के रूम में...'' उसके चेहरे पर एक स्निग्ध मुस्कान तैर गई,''नहीं सिर्फ तुहारे रूम में।'' ''पूछ सकती हूं ऐसा क्यों?'' वह गभीर हो उठा,''सात दिन पहले जब तुम इस हॉस्पिटल में आई थीं, तुम बेहोश थीं, किंतु तुम्हारे चेहरे पर इतना दर्द सिमट गया था, तुम इतनी परेशान और बेचैन दिखाई दे रही थीं मानो असंख्य नागफनी के कांटे तुहारी आत्मा को लहुलुहान कर रहे हों। तभी मेरी अंतरात्मा से आवाज आई कि मुझे तुहारी पीड़ा को जानना चाहिए और उसे दूर करने में तुम्हारी मदद करनी चाहिए। पूछ सकता हूं, किस दर्द से गुजर रही थीं तुम? ऐसा क्या हो गया था, जो बेहोश हो गईं थीं।'' वह कुछ पल उसे देखती रही। उसकी आंखों में नमी तैर गई। वह बोली,''मैं मरना चाहती थी इसीलिए मैंने आत्महत्या करने का प्रयास किया था फिर भी बच गई।''''क्या कहा, आत्महत्या?'' वह बुरी तरह चौंका और उसे देखता रहा फिर बोला,''मेरे ख्याल से तुहारी उम्र 20-21 साल से अधिक नहीं है और अभी से तुम जीवन से हार बैठीं!''''मैं तो प्रारभ से ही जीवन से हारे बैठी हूं। सच पूछो तो एक हारी हुई बाजी लड़ रही थी मैं। जब हिमत जबाब दे गई तो मैंने मौत को गले लगाना चाहा, किंतु यहां भी मैं हार गई। मौत भी मुझे दगा दे गई।''''शुरू से बता सकती हो अपनी कहानी?'' उसका स्वर बेहद नम्र था। वह बोली,''दरअसल, अपने मम्मी-पापा की मैं अनवॉन्टेड चाइल्ड हूं। मुझसे पहले उनकी एक बेटी थी यानी कि मेरी दीदी। दूसरी बार वे बेटा चाहते थे किंतु मैं पैदा हो गई। अपने बचपन की वह घटना मैं कभी नहीं भूल पाई। घर में एक परिचित आए हुए थे। उन्होंने मम्मी से पूछा था,'दोनों बेटियां हैं आपकी। कोई बेटा नहीं है?' मम्मी के बदले दादी ने जवाब दिया था,'अरे, हम तो बेटा ही चाहते थे। पता नहीं ईश्वर ने किन कर्मों की सजा दी कि इसे भेज दिया। बताओ भला, अब कौन बुढ़ापे का सहारा बनेगा? वंश का नाम आगे कैसे बढ़ेगा?' लड़की होने की सजा मैंने हमेशा भुगती। दीदी के लिए नए कपड़े बनवाए जाते, किंतु मुझे उनके छोटे पुराने कपड़े दिए जाते। यही हाल खिलौनों और दूसरी चीजों का भी था। मुझे लगता था, घर में कोई मुझे प्यार नहीं करता। इसी एहसास के चलते धीरे-धीरे मैं अंतरमुखी होती जा रही थी।''''बस इतनी-सी बात के लिए आत्महत्या?'' रजत ने प्रश्नवाचक नजरों से देखते हुए पूछा। यह सुन वह अचकचा गई और दोबारा कहना शुरू किया, ''इतनी-सी बात नहीं है। मैं और दीदी बड़े हो गए थे। एक दिन पापा घर आए तो बेहद गुस्से में थे। उन्होंने दीदी को एक लड़के के साथ घूमते देख लिया था। पूछने पर दीदी ने निडरता के साथ स्वीकारा कि उनका अनिल नाम के उस लड़के के साथ अफेयर चल रहा

था और वह उसी के साथ शादी करेंगी। पापा-मम्मी शादी के लिए बिल्कुल सहमत नहीं थे किंतु दीदी पर उनकी बातों का कोई असर नहीं पड़ा और एक दिन उन्होंने घर से भागकर शादी कर ली। दीदी के इस कदम से पूरा घर हिल गया। मम्मी-पापा का मुझपर से भी विश्वास उठ गया। वे दोनों भयभीत थे कि कहीं मैं भी दीदी की तरह प्यार-व्यार के चकर में पड़कर कोई गलत फैसला न ले लूं। पर सच कहूं तो दीदी के बारे में सुनकर मेरा दोस्ती, प्यार, शादी इन सभी रिश्तों पर से विश्वास उठ गया था। किंतु अब पापा कोई रिस्क लेना नहीं चाहते थे। उन्होंने मेरी भावनाओं को अनदेखा कर मेरे लिए रिश्ते तलाशने प्रारंभ कर दिए। इसी निराशा में आकर मैंने एक दिन नींद की गोलियों की ओवरडोज ले ली, किंतु ऐन वक्त पर मम्मी-पापा मुझे हॉस्पिटल ले आए और मैं बच गई,'' फिर रिया खामोश हो गई। गभीरतापूर्वक उसकी आपबीती सुन रहा रजत कुछ सोचने लगा। इससे पहले कि वह कोई प्रतिक्रिया व्यत करता, उसने कहा,''अब आप अपने बारे में बताइए।'' यह सुन ख्यालों की दुनिया से बाहर आते हुए रजत ने कहना शुरू किया,''पापा शहर के नामी वकील हैं। आईआईटी रुड़की से इंजीनियरिंग करके मैं पूना की एक मल्टिनेशनल कंपनी में जॉब करता था। दो वर्ष बाद ही कंपनी ने मुझे अमेरिका भेज दिया। खूब पैसे कमाया, फिर मन उचटने लगा। रात-दिन यह विचार मथने लगा कि या जीवन का मकसद सिर्फ पैसे कमाना और सुख-सुविधाएं अर्जित करना है? मन ही मन एक निर्णय लिया, जॉब छोड़कर इंडिया आ गया। मम्मी-पापा की सहमति से एक स्कूल खोला, जिसमें टीचर्स बहुत डेडिकेशन के साथ बच्चों को पढ़ाते हैं। साथ ही निर्धन जरूरतमंद बच्चों को आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। धीरे-धीरे मेरा स्कूल चल निकला। मेरा इरादा उसी स्कूल की दूसरी ब्रांच खोलने का था। उन्हीं दिनों मेरी तबीयत खराब रहने लगी थी। सिर में बेहद दर्द रहता था। टेस्ट करवाए तो पता चला, मुझे ब्रेन ट्यूमर है। ऑपरेशन के लिए यहां एडमिट होना पड़ा। प्रकृति के खेल भी निराले हैं रिया, मैं जीना चाहता हूं ताकि लोगों के काम आ सकूं, किंतु विडबना देखो, मौत मेरे सिरहाने खड़ी है। इतने नामी वकील होते हुए भी पापा ईश्वर की अदालत में मेरा केस जीत नहीं पा रहे हैं। दूसरी ओर तुम, जो जिंदगी से हार मानकर मर जाना चाहती हो। लोगों की परिस्थितियां इससे भी बदतर होती हैं, फिर भी वे जज्बा कायम रखते हैं और हालात को अपने अनुकूल बनाते हैं। जिस दिन से तुम हॉस्पिटल में एडमिट हुई हो, मैंने तुहारे घरवालों को बुरी तरह रोते-बिलखते देखा है। ईश्वर से तुहारे लिए प्रार्थना करते देखा है। पॉजिटिव सोचने और अच्छे कार्य करने से चीजें खुद-ब-खुद अच्छी होने लगेंगी।'' मंत्रमुग्ध दृष्टि से रजत को निहारते हुए वह बोली,''रजत, आपकी बातों ने मेरे हृदय के आईने पर पड़ी नेगेटिवटी की धूल को पोंछकर बिल्कुल साफ कर दिया है। पिछला सब कुछ भुलाकर आज से मैं वर्तमान में जिऊंगी।'' आत्मविश्वास से भरपूर उसने रजत की ओर अपना हाथ बढ़ाया, जिसे रजत ने स्नेह से थाम लिया। रजत को छूते ही उसके दिल की धड़कनें तेज हो गईं और वह हांफने लगी। तुरंत उसकी आंखों के आगे एक तेज रौशनी छा गई। आंखें चुंधियाकर बंद हो गईं। फिर धीरे-धीरे उसने अपनी आंखें खोलीं तो वह अचभित रह गई।

मम्मी-पापा, दीदी, डॉक्टर सभी उसके सामने खड़े हैं। रजत कहां गया? उसे जगा हुआ देख मम्मी और दीदी उसके गले लग रो पड़ीं। पापा ने कसकर उसका हाथ थाम लिया। उनकी आंखों से भी अविरल आंसू बह रहे थे। डॉक्टर ने पापा के कंधे पर हाथ रख कहा,''मिस्टर विनय, आपकी बेटी इतने दिनों बाद कोमा से बाहर आई है। आपका इस तरह रोना उसके माइंड पर स्ट्रेस डालेगा। उसे प्रसन्न रखने का प्रयास कीजिए।''''कैसी तबीयत है रिया?'' पापा ने स्नेह से पूछा। उसके होंठ धीरे से कांपे। कमजोर आवाज में वह बोली,''आईएम सॉरी पापा!'' डॉक्टर आवश्यक हिदायतें देकर जाने लगे तभी वह बोली,''डॉक्टर, रजत कहां है?'' डाक्टर ने हैरानी से कुछ क्षण उसकी ओर देखा और कहा,''कौन रजत? वो रूम नंबर 108 का रजत! तुम उसे कैसे जान सकती हो रिया, क्योंकि सात दिन पहले जब तुम हॉस्पिटल में लाई गई थीं, बेहोशी की हालत में ही तुम कोमा में चली गई थीं। उसी दिन रजत का ऑपरेशन था। ऑपरेशन के दौरान उसकी डेथ हो गई थी।'' वह स्तब्ध, जड़वत् रह गई। तो फिर रजत के साथ गुजरा वक्त, उसकी वे बातें, वह सब क्या था? वह आश्चर्यचकित थी कि कभी-कभी ईश्वर हमारे जीवन में बदलाव लाने के लिए कैसी चमत्कारिक घटनाओं को अंजाम देता है। उसकी आत्मा में रच बस गई है रजत की खुशबू। अब इस खुशबू को बचाए रखेगी जीवनभर।

पापियों के उद्धार की अनोखी योजना

मनोज कुमार पांडेय

स्वर्णदेश का राजा उन लोगों के लिए हमेशा दुखी रहा करता था जो किसी न किसी वजह से पतन के गर्त में गिरे हुए थे। वह बार बार उनके लिए द्रवित होता। कई बार तो रोने ही लगता। वह हमेशा सोचता कि उन पतितों से जो भी अपराध हुए हों पर हैं तो ये सभी स्वर्णदेश की इसी पावन धरती के निवासी। इन सबमें स्वर्णदेश की उसी पवित्र हवा और पानी का अंश है जो राजा में है। जो गुप्तमंत्री में है।

आह! गुप्तमंत्री कहाँ हो तुम, राजा ने एक भावुक साँस खींची।

नाम लेते ही गुप्तमंत्री हाजिर हो गया। यही तो खूबी थी उसकी। कई बार तो खुद राजा तक को नहीं पता चलता कि वह गुप्तमंत्री को याद कर रहा है पर गुप्तमंत्री को पता चल जाता और वह तुरंत हाजिर हो जाता।

राजा उसकी इस अदा पर फिदा था पर कई बार जब वह अकेला होता था तो उसे डर भी लगता कि गुप्तमंत्री उसे इस हद तक जानता है। पर वह इस डर के मारे डर भी नहीं पाता था कि कहीं गुप्तमंत्री को उसके डर के बारे में पता न चल जाय।

देर तक राजा गुप्तमंत्री को और गुप्तमंत्री राजा को देखता रहा।

गुप्तमंत्री ने देखा कि राजा की आँखों में आँसू हैं। वह विह्वल हो गया। प्रोटोकाल की परवाह किए बिना गुप्तमंत्री ने राजा के आँसुओं को पोंछ डाला और राजा के हाथ अपने हाथों में लेकर उन्हें सहलाने लगा। हाथ सहलाते सहलाते वह राजा की चरणों में बैठ गया।

राजा अब भी चुप और भावुक दिख रहा था।

अब गुप्तमंत्री से नहीं रहा गया। उसने पूछ ही लिया कि हे महाराज इस दास को बताइए कि वह कौन सी चिंता है जो आपको इस कदर कमजोर बना रही है?

राजा बोला कि हे गुप्तमंत्री तुमसे ज्यादा मेरे बारे में कौन जानता है? मेरी भुजाओं में हजारों शेरों का बल है। आँखों में ज्वालामुखियाँ लहराती हैं। चलते हुए सँभलकर पैर रखना पड़ता है कि कहीं आसपास के लोगों को भूकंप का डर न सताने लगे। बचपन में मैंने एक दुष्ट हाथी को सूँड़ से नचाकर आसमान में उछाल दिया था जो आज तक एक क्षुद्र उपग्रह के रूप में पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है। और तो औरज

जानता हूँ महाराज, गुप्तमंत्री ने कहा। इसीलिए तो आपकी यह दशा मुझे और भी विचलित कर रही है। अब अधिक समय लेकर दास के धैर्य का इम्तहान न लें और उस चीज के बारे में बताएँ जो आपको यूँ अधीर बना रही है। जितना मैं आपको जानता हूँ यह जो भी समस्या होगी हर हाल में स्वर्णदेश से जुड़ी होगी। इसके सिवा और किसी भी बात में वह क्षमता नहीं है कि वह आपको इस कदर अधीर बना सके। गुप्तमंत्री की बात सुनकर राजा ने उसे गले से लगा लिया और गले लगाये हुए ही अपने भीतर की बात गुप्तमंत्री के कानों में कहने लगा। पूरी बात सुनकर गुप्तमंत्री के चेहरे पर चिंता की लकीरें खिंच गईं।

थोड़ी देर तक वह गंभीरता से सोचता रहा फिर बोला, उपाय है महाराज। पर ये उपाय ऐसा है कि इसके लिए आपको बहुत त्याग करना होगा। तरह तरह के लांछन सहने होंगे। इसलिए मैं यह उपाय आपके सामने रखने की हिम्मत नहीं कर पा रहा हूँ। बदले में राजा ने गुप्तमंत्री से कहा कि वह निर्भीक होकर अपनी बात कहे। जिस तरह कि वह अब तक करता आया है। और जिस लिए वह राजा को अत्यंत प्रिय है।

गुप्त मंत्री ने तब कहा कि हे महाराज इस समस्या का एकमात्र उपाय यह है कि आप उस नदी को सबके नहाने के लिए खोल दीजिए जिसमें अब तक आप और आपके प्रिय अनुचर ही नहाते रहे हैं। इस नदी में नहाकर सब पवित्र और निष्पाप हो जाएँगे। आप उन सबको बुलाइए और गले लगाइए। आपसे मिलकर, आपको छूकर उनके भीतर बची रही सही कालिमा भी सदा के लिए नष्ट हो जाएगी। यह अलग बात है कि इसके लिए आपको विरोधियों की तरफ से तरह तरह के लांछनों और हमलों के लिए तैयार रहना होगा।

राजा ने फैसला करने में पल भर भी देर नहीं लगाई।

उसने कहा कि स्वर्णदेश और उसके लोगों के हित में

मैं कितने भी लांछन और हमले खुशी खुशी झेलने के लिए तैयार हूँ। जाओ और जाकर एलान करवा दो कि वह नदी जिसका पानी पीकर मैं बड़ा हुआ हूँ। जो मेरी रगों में खून की तरह बहती है वह आज और अभी से सभी तरह के अपराधियों, भ्रष्टाचारियों, हत्यारों और बलात्कारियों के लिए खोल दी गई है। वे आएँ और इसमें डुबकी लगाकर अपने पापों से मुक्ति पाएँ।

इस बात की व्यवस्था करो कि जेलों में बंद जो पापी नदी में डुबकी लगाना चाहते हैं उन्हें भी इस बात का पूरा मौका मिले। तुम तो जानते ही हो कि मैं किसी भी तरह के पक्षपात का घोर विरोधी हूँ। एक भी पापी निष्पाप होने से बचा रह गया तो मैं इस पूरी योजना को ही असफल मानूँगा। आज और अभी से यह नदी सभी तरह के छोटे से छोटे और बड़े से बड़े पापियों के लिए पूरी तरह से खोल दी जाय।

यह योजना पूरी तरह से कामयाब रही। स्वर्णदेश अपराधियों से लगभग मुक्त ही हो गया। नदी के दोनों किनारों पर पापियों की भीड़ लग गई। वे एक पवित्र खुशी से पागल हो रहे थे। नदी के जल में उतरते ही वे हमेशा के लिए पवित्र हो जाने वाले थे।

यह ऐसी बात थी जिस पर अभी भी उन्हें भरोसा नहीं हो रहा था। वे खुद को और दूसरों को चिकोटी काट रहे थे और जाँच रहे थे कि कहीं वे सपना तो नहीं देख रहे हैं। और तब तो वे विह्वल ही हो गए जब उन्होंने पाया कि यह सपने जैसी लगने वाली बात एकदम सच्ची थी। फिर तो इतनी बड़ी संख्या में लोग पवित्र नदी में उतरे की नदी का पानी गाढ़ा और मटमैला हो गया। पापी लोग नदी में नहाते गए और पवित्र होते गए पर उनके नदी में घुल रहे पापों की वजह से नदी में रहने वाले जीव जंतु त्राहि त्राहि करने लगे। जब उनकी त्राहि त्राहि का शोर ज्यादा बढ़ गया तो एक राजाज्ञा निकाली गई जिसमें उन्हें स्वर्णदेश के हित में चुप रहने का आदेश दिया गया।

आदेश में यह भी था कि नदी की सफाई के लिए जल्दी ही एक महाबजट जारी किया जा रहा है। खुद राज परिवार के अनेक लोगों ने पापियों के नदी-स्नान पर दबे-छुपे स्वर में आपत्ति जताई पर राजा के आदेश का खुला विरोध करने का साहस उनमें नहीं था।

जब बड़ी संख्या में पापी लोग नदी नहाकर पापमुक्त और इससे भी ज्यादा इज्जतदार बन गए तो उन्होंने राजा को उनकी अपार दयालुता की याद दिलाते हुए माँग की कि अब उनके पुनर्वास की व्यवस्था की जाय। वे फिर से पुरानी दुनिया में न लौट जाएँ इस लिए जरूरी है कि उनका समुचित पुनर्वास किया जाय।

इस माँग में धमकी का स्वर साफ साफ सुनाई दे रहा था फिर भी स्वर्णदेश के हित में राजा ने इस धमकी को नजरंदाज किया और गुप्तमंत्री के साथ पुनर्वास योजना की रूपरेखा बनाने में जुट गए।

यह बहुत ही कठिन काम था पर गुप्तमंत्री के सक्रिय सहयोग से राजा ने यह भी कर दिखाया। तय पाया गया कि पापी के रूप में इन इज्जतदार लोगों का जो क्षेत्र रहा है वही उन्हें दिया जाय। इससे दो बातें होंगी। एक तो उनके पास अपनी गलतियाँ सुधारने का मौका होगा और दूसरे स्वर्णदेश को उनके अनुभवों का लाभ भी मिल सकेगा।

यह जरूरी है कि लोगों के अनुभवों को नजरंदाज न किया जाय। स्वर्णदेश के आगे बढ़ने का यही एकमात्र रास्ता है। राजा ने गुप्तमंत्री का गाल थपथपाते हुए कहा था।

अगले दिन राजा के हस्ताक्षर के साथ पुराने अपराधियों जो कि अब और देशप्रेमी नागरिक बन चुके थे उनके पुनर्वास के बारे में आदेश जारी किया गया। इसमें कहा गया था कि चोरों को चौकीदारी, गुंडों और डाकुओं को पुलिस, आतंकवादियों को सेना, ब्लैकमनी वालों को बैंकिंग, बलात्कारियों को स्त्री शिक्षा व कल्याण आदि के काम दिए जायँ। आदेश में यह भी था कि उनसे कोई प्रमाणपत्र वगैरह न माँगा जाय और पवित्र होने से पहले का उनका आपराधिक रिकार्ड ही उनकी योग्यता का सबसे बड़ा प्रमाण पत्र समझा जाय। इसी तरह से घोटालेबाजों, कफनचोरों, देशद्रोहियों और जमाखोरों का भी पुनर्वास किया गया।

यह योजना इतनी कामयाब रहेगी इसकी कल्पना राजा को भी नहीं थी। राजा के विरोधियों के पास विरोध करने का कोई मुद्दा ही नहीं बचा। सारे पवित्र हुए लोग अपने पिछले जीवन को इतना कोसते कि उतना विरोधियों के लिए भी संभव न होता।

वे बताते कि वे विरोधियों के चक्कर में आकर अपना सही रूप भूलकर पापी हो गए थे। और अब राजा जी के आशीर्वाद से उन्हें अपने सही स्वरूप का ज्ञान हो गया है। और जब तक राजा जी का आशीर्वाद उन पर बना रहेगा वे अपना यह स्वरूप कभी नहीं भूलेंगे।

यही नहीं वे राजा के विरोधियों को सबक सिखाने में राजा की बिना शर्त मदद के लिए भी तैयार थे। उनकी इस मदद के प्रस्ताव से राजा के गद्गद हो उठा। अपने ट्विटर संदेश में राजा ने कहा कि इसका मतलब यह है कि ये लोग पूरी तरह से बदल चुके हैं।

राजा की इस उदार योजना के बावजूद जब राजा के विरोधी शांत नहीं हुए तो राजा को प्रजा के नाम एक सार्वजनिक संदेश देना पड़ा। संदेश देते हुए राजा ने कहा कि जो विरोधी है वह देशद्रोही है। और जो देशद्रोही है वह मेरा निजी दुश्मन है।

देशद्रोहियों को ललकारते हुए राजा ने कहा कि मैं पिछले राजाओं की तरह नहीं हूँ। मैं इनकी ईंट से ईंट बजा दूँगा। उन्हें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि पापियों के निष्पाप होने की प्रक्रिया में सभी बंदीगृह पूरी तरह से खाली हो गए हैं। उन्हें इन्हीं देशद्रोहियों से भरा जाएगा।

राजा ने प्रजा यानी अपने समर्थकों को यह जिम्मेदारी दी कि वह इन देशद्रोहियों को सबक सिखाए और इन्हें काबू में करने में और स्वर्णदेश को आगे बढ़ाने में राजा की मदद करे। अपनी प्यारी प्रजा के सक्रिय सहयोग के बिना हम कुछ भी नहीं कर सकते, राजा ने कहा।

प्रजा ने गद्गद भाव से राजा की जयजयकार की। बदले में राजा ने प्रजा की तरफ हाथ हिलाया और वहाँ से सीधे विदेश यात्रा पर निकल गया।

आगे का काम प्रजा ने बखूबी सँभाल लिया। अगले कुछ दिनों में प्रजा ने बहुत सारे देशद्रोहियों को मार गिराया। प्रजा के सहयोग से जल्दी ही सभी बंदीगृह फिर से आबाद हो गए। जल्दी ही मीडिया राजा की इस योजना के बखान से रंग गई।

मीडिया दिग्गजों ने कहा कि वे इस योजना का सिर्फ एक ही पहलू देख पाए थे। जबकि माननीय राजाजी ने न सिर्फ पुराने पापियों का उद्धार किया बल्कि उन तत्वों की भी शिनाख्त करने और धर-पकड़ने में सफलता हासिल की जो भविष्य में अपराध या कि पाप करने वाले थे। यह काम करने वाले वे स्वर्णदेश के ही नहीं बल्कि अखिल ब्रह्मांड के पहले राजा हैं।

उधर इस प्रशंसा को निरपेक्ष भाव से स्वीकार करते हुए दूर एक रंग-बिरंगे देश के एक रंगारंग आयोजन में पत्रकार होने का अभिनय कर रहे एक मसखरे से राजा ने कहा कि वह बंदीगृह में बंद देशद्रोहियों के लिए जल्दी ही एक नई योजना ले आएँगे जिससे कि इन सब की आत्मा का शुद्धीकरण हो सके। इस पर मसखरे ने तालियाँ बजाई जिससे ऐसी आवाज आई मानों वह अपना गाल पीट रहा हो।

समरसता की विट्री

सोनाली मिश्रा

विजय के नगाड़े सिरमिया देवी को बेसुध किए जा रहे थे, ये उन्हीं की जीत के नगाड़े थे। वह अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी से रिकार्ड मतों से आगे चल रही थीं। मतगणना बस खत्म होने वाली थी। अब किसी भी फेरबदल की उम्मीद नहीं थी। रजिया चुनाव कार्यालय में इन नगाड़ों की अगुआई कर रही थी। सिरमिया देवी का जी आज की विजय से रो रहा था। उन्होंने कभी इस तरह जीत नहीं चाही थी, हमेशा पार्टी में रहकर पार्टी के टिकट पर जीत उनका सपना था। जिस पार्टी को उन्होंने ब्लाक स्तर से उठाकर जिला और फिर प्रदेश स्तर पर अपने खून-पसीने से सींचा था, आज उसी के उम्मीदवार को और वह भी उनकी पार्टी के सर्वेसर्वा की बहू को हराकर, वह जीत रही थीं। उनकी आंखों में आंसू थे। वह खुद नहीं समझ पा रही थीं, यह आंसू खुशी के हैं, दुख के हैं या विजय के? अभी छह महीने पहले तक सब ठीक था।

युवावस्था से अधेड़ावस्था तक पूरे बीस साल उन्होंने पार्टी को समर्पित किए थे। मंडल और कमंडल की राजनीति के समय में सामाजिक न्याय को लेकर बनी इस पार्टी से पहले जाति और धर्म के आधार पर कुछ नहीं था। सिरमिया देवी का मन अपने समाज के लिए विशेषकर औरतों के लिए बहुत कुछ करने का था। ऐसे में युवा सिरमिया देवी ने सामाजिक समरसता का नारा बुलंद करने वाली इस पार्टी का दामन थाम लिया था।

पैंतालीस बरस की सिरमिया देवी इस पार्टी के महिला मंडल को जिला प्रमुख थीं। सीधे पल्ले की साड़ी पहने, ठेठ देसी अंदाज में जिंदा रहने वाली सिरमिया देवी का अपने जिले में बोलबाला था। राशन न मिलने से लेकर पति की मारपीट की बात भी औरतें सिरमिया देवी से करने आ जाती थीं। वह महिलाओं को आत्मीय थीं। हर गली-ब्लॉक में उनकी महिला टीम थी। 'सिरमिया देवी जिंदाबाद, जिंदाबाद।' नारे उनके कानों में पड़ने लगे। उन्होंने अपने कान बंद कर लिए। उनके सामने पच्चीस बरस की सिरमिया खड़ी हो गई जिसे नेता साहब ने पार्टी में जगह दी थी। सिरमिया देवी को लगा नेता साहब उनके सामने खड़े हो कर कटाक्ष कर रहे हैं, 'अब तो अच्छा लग रहा होगा। उसी झंडे को हरा देना जिसके नीचे राजनीति सीखी, पहचान मिली। वाह सिरमिया।'

'मैंने क्या गलत किया। मैं भी तो उसूलों की खातिर ही पार्टी में आई थी। पार्टी छोड़कर मैं तो कहीं नहीं गई न। आप ही लोगों ने भगा दिया था। आप ही लोगों ने आवाज बुलंद की थी परिवार के खिलाफ। यही कहा था न आपने कि अब जनता का राज होगा, लोकतंत्र आएगा। लोकतंत्र रटते-रटते कब आपकी पार्टी आपके परिवार की पार्टी बन गई आपको खुद भी पता नहीं चल पाया।' विचारों में खोई सिरमिया छह महीने पहले पार्टी कार्यालय पहुंच गई। उनके

परिचितों का मानना था कि उन्हें चुनाव लड़ना चाहिए। वह उस क्षेत्र विशेष की समस्या से वाकिफ हैं। उन्हें पता है कौन सी सड़क कब बनी और राशन की कालाबाजारी कौन करता है। बीस साल से समस्याओं से लड़ते-लड़ते यह सब कैसे उनके दैनिक रूटीन का हिस्सा बन गया उन्हें पता नहीं चला। पर टिकट लेना इतना आसान था क्या? 'तो क्या सोचा है आपने?' प्रदेश प्रमुख ने पूछा था। 'हमने?' 'जो आपने। यानी नई जिम्मेदारी के बारे में। महिला मंडल की प्रांच प्रमुख की जिम्मेदारी के बारे में ?' सिरमिया सुन कर बस चुप लगा गई। तब उनकी सहयोगी रजिया बोली, 'देखिए सर...।' 'रजिया जी, आप चुप रहें, यह हमारे और सिरमिया देवी के बीच की बात है।' 'भाई साहब आप तो जानते हैं, मैंने कितनी मेहनत की पार्टी को उस इलाके में खड़ा किया है। लोग मुझे वहां की नेता के रूप में देखना चाहते हैं,' सिरमिया देवी ने संकेत में अपनी बात रखी। 'सिरमिया पार्टी के कुछ नियम हैं और हमें उन पर चलना है,' उन्होंने ने भी पांसा फेंका। 'पार्टी के नियम क्या हैं। आम कार्यकर्ता काम करे, डंडे खाएं और जब ब्लॉक, शहर और महानगर स्तर पर पार्टी की साख बन जाए तो एसी में बैठे लोग बाहर आएं और परिवारों के सदस्यों में टिकट बंट जाएं। मेहनत करने वाला कार्यकर्ता कहां जाएगा?'

'देखो, सिरमिया हम जानते हैं आपने मेहनत की है इसलिए आपको पद दे रहे हैं। चलिए, महिला मंडल के प्रांत प्रमुख के बजाय आपको महिला मंडल का प्रांत अध्यक्ष बना देते हैं। अगर पद देना ही चाहते हैं तो जिला अध्यक्ष बना दीजिए,' सिरमिया देवी ने भी तय किया था कि आज बिना साफ जवाब सुने नहीं जाएंगी। 'जिला अध्यक्ष।' वह ऐसे चौंके जैसे बिच्छू ने डंक मार दिया। 'एक औरत जिला अध्यक्ष। पूरा संगठन तबाह हो जाएगा। एक औरत को जिला अध्यक्ष पद पर बैठाने का मतलब जानती हो?' हमसे राजनीति करने के बजाय महिला मंडल में राज करो, उनके चेहरे पर काइंयापन पूरे कमरे में फैल गया। सिरमिया देवी ने भी अपनी सारी कड़वाहट समेटी और दो टूक बोल दिया, 'आप सही कहते हैं, चुनाव तो चांदी का चम्मच लिए पैदा हुए लोग लड़ते हैं। पर हम भी आपको दिखा देंगे गरीबों की ताकत।' 'ठीक है, फिर ऐसा ही सही। राजनीति में बीस बरस गुजराने के बाद तुम्हें पता ही होगा बड़े नेता विरोधियों को कैसे मारते हैं। नेता जी का काटा पानी नहीं मांगता,' प्रांत मुख के साथी व्यंग्य से बोले। 'तब ठीक है इस बार आपकी बहूरानी और हमारी दीदी के बीच मुकाबला हो ही जाने दीजिए। देखते हैं, जनता कार्यकर्ता को देखना चाहती है या महारानी को। हमें अपने बीच से नेता चाहिए राजघराने से नहीं,' रजिया ने दबंगई से फैसला ही सुना दिया। उस दिन भारी बहस के बाद, अनुशासनहीनता के आरोप में सिरमिया देवी को पार्टी से निकाल दिया गया। कमरे में बैठने वाले नहीं जानते थे कि उस इलाके में उनकी पकड़ थी। उस क्षेत्र की वह चहेती थीं। धरने-प्रदर्शन के अलावा कार्यकर्ताओं पर उनकी बहुत पकड़ थी। छोटे से छोटे कार्यकर्ता को वह नाम से जानती थीं। अपने क्षेत्र की हर समस्या पर उनकी नजर रहती थी। उसका हल कैसे निकलेगा यह भी वह जानती थीं। मगर फिर चुनाव लड़ना वह भी बागी होकर। उनकी हिम्मत जवाब दे रही थी। मगर कदम बढ़ा कर वह पीछे नहीं खींच सकती थीं। अब जीत हो या हार। अपनी जद्दोजहद पर काबू पाकर आखिर उन्होंने निर्दलीय पर्चा भर दिया। सफर आसान नहीं था। पर दिन प्रतिदिन कार्यकर्ताओं के उत्साह ने उन्हें नई ऊर्जा दी। उनके साथ वह सब लोग जुट गए जिनकी मदद कभी न कभी सिरमिया देवी ने की थी। रजिया ने नेता साहब की बहू और सिरमिया देवी के बीच अपना बनाम बाहरी मुददा बना दिया। रजिया ने नारा गढ़ा, जिले की दीदी, विधानसभा इस बार जरूर जाएगी।

रजिया का यह नारा खूब चल पड़ा। सिरमिया देवी को सच्ची मदद मिली उन लोगों से जिसके बीच उन्होंने अपने पंद्रह-बीस बरस बिताए थे। कभी किसी की झोपड़ी टूटी तो सिरमिया हाजिर, कभी किसी की दुकान पर अवैध वसूली तो सिरमिया हाजिर। सिरमिया का न परिवार था, न कोई आगे पीछे। एक मां थी जो उनके भाई के साथ रहती थी। उन पर दर्जनों पुलिस केस थे, जो उनके संघर्ष की कहानी कहते थे। सीधे पल्ले की साड़ी और पैरों में हवाई चप्पल उनकी पहचान बन गई थी। 'दीदी बाहर तो चलिए। देखिए कितने लोग जमा हैं। सब आपको देखना चाहते हैं,' रजिया लगभग चिल्लाती हुई भीतर आई। सिरमिया देवी बाह निकलीं तो कार्यकर्ताओं को हुजूम था। लोगों ने उन्हें फूलमालाओं से लाद दिया। उनके समर्थन में गगनभेदी नारे लग रहे थे। शोर था, नेता साहब की बहू को दीदी ने हरा दिया। रजिया कह रही थी, 'दीदी देखो राजतंत्र हार गया, लोकतंत्र जीत गया।'

दो जीवन समानांतर

डॉ. संगीता झा

हैलो, क्या मैं इस नबर पर दीप्ति जी से बात कर सकता हूं? –हां, मैं मिसेज धवन ही बात कर रही हूं। कैसी हो? देखिए, मैं पहचान नहीं पा रही हूं। पहले आप अपना नाम बताइए और बताइए, या काम है मुझसे? अगर मैं अपनी शराफ़त का परिचय दे दूं तो? तो मुंह से बोलिए तो सही। क्यों मेरा दिमाग खराब किए जा रहे हैं। आज से बीस बरस पहले 1979 की दिसबर की एक सर्द शाम देश की राजधानी दिल्ली में कनॉट प्लेस में रीगल के पास शाम छः बजे आपने किसी भले आदमी को मिलने का टाइम दिया था। ओह गॉड, तो ये आप हैं जनाब। आज... अचानक... इतने बरसों के बाद? जी हां, यह खाकसार आज भी बीस साल से वहीं खड़ा आपका इंतजार कर रहा है। लेकिन कभी खोज खबर तो नहीं ली हमारी। हमेशा चाहता रहा। जब भी चाहा, रुकावटें तुहारी तरफ से ही रहीं। बल्कि मैं तो जिंदगीभर के लिए तुहारी सलामती का कान्ट्रैट लेना चाहता था, तुहीं पीछे हट गईं। तुहीं नहीं चाहती थीं कि तुहारी खोज खबर लूं, बल्कि टाइम दे कर भी नहीं आती थीं। कई साल पहले, शायद तुहारी पहली ही पोस्टिंग वाले आफिस में बधाई देने गया था तो डेढ़ घंटे तक रिसेप्शन पर बिठाए रखा था तुमने, फिर भी मिलने नहीं आई थीं। मुझे ही पता है कितना ख़राब लगा था मुझे कि मैं अचानक तुहारे लिए इतना पराया हो गया कि... तुहें आमने–सामने मिलकर इतनी बड़ी सफलता की बधाई भी नहीं दे सकता। तुम सब कुछ तो जानते थे। मैं उन दिनों एक दम नर्वस ब्रेक डाउन की हालत तक जा पहुंची थी। उन दिनों प्रोबेशन पर थी, एकदम नए माहौल, नई जिम्मेवारियों से एडजस्ट कर पाने का संकट, घर के तनाव, उधर ससुराल वालों की अकड़ और ऊपर से तुहारी हालत, तुहारे पागल कर देने वाले बुलावे। मैं ही जानती हूं, मैंने शुरू के वे दो एक साल कैसे गुज़ारे थे। कितनी मुश्किल से खुद को संभाले रहती थी कि किसी भी मोर्चे पर कमज़ोर न पड़ जाऊं। मैं इन्हीं वजहों से तुमसे मिलना चाहता रहा कि किसी तरह तुहारा हौसला बनाए रखूं। कुछ बेहतर राह सुझा सकूं और मजे की बात कि तुम भी इन्हीं वजहों से मिलने से कतराती रहीं। आखिर हम दो दोस्तों की तरह तो मिल ही सकते थे। तुहारे चाहने में ही कोई कमी रह गई होगी। रहने भी दो। उन दिनों हमारे कैलिबर का तुहें चाहने वाला शहर भर में नहीं था। यह बात उन दिनों तुम भी मानती थीं। दरअसल, मैं किस मुंह से तुहारे सामने आती। बाद में भी कई बार लगता रहा, काफी हद तक मैं खुद ही उन सारी स्थितियों की जिम्मेवार थी। उस वत थोड़ी हिमत दिखाई होती तो...तो क्या होता? होता क्या, मिस्टर धवन के बच्चों के पोतड़े धोने के बजाये तुहारे बच्चों के पोतड़े धोती। तो या ये सारी जद्दोजहद बच्चों के पोतड़े धुलवाने के लिए होती है? श्रीमान जी,

आईएएस हो या आईपीएस, जब औरत शादी करती है तो उसकी पहली भूमिका बीवी और मां की हो जाती है। उसे पहले यही भूमिकाएं अदा करनी ही होती हैं, तभी आफिस के लिए निकल पाती है। तुहीं बताओ, अगर तुहारे साथ पढ़ाती रहती, मेरा मतलब, वहां रहती क्या तुमसे रिश्ता बन पाता तो या इन कामों से मुझे कोई छूट मिल सकती थी? अच्छा, बाइ द वे, क्या तुहारी ममी ने उस दिन मेरे वापिस आने के बाद वाकई जहर खा लिया था या यह सब एक नाटक था, तुहें लैकमेल करने का। मुझसे तुहें दूर रखने का रामबाण उपाय? अब छोड़ो उन सारी बातों को। अब तो मम्मी ही नहीं रही हैं इस दुनिया में। ओह सॉरी, मुझे पता नहीं था। और कौन-कौन हैं घर में? तुम तो जासूसी करते रहे हो। पता ही होगा। नहीं, वो बात नहीं है। तुहारे ही श्रीमुख से सुनना चाहता हूं। बड़ी लड़की अनन्या का एमबीए का दूसरा साल है। उससे छोटा लड़का है दीपंकर। आईआईटी में इंजीनियरिंग कर रहा है। और मिस्टर धवन कहां हैं आजकल? आजकल वर्ल्ड बैंक में डेप्युटेशन पर हैं।

खुश तो हो? बेकार सवाल है। क्यों? पहली बात तो, किसी भी शादीशुदा औरत से यह सवाल नहीं पूछा जाता चाहे वह आपके कितनी भी करीब क्यों न हो। और दूसरे, शादी के बीस साल बाद इस सवाल का वैसे भी कोई मतलब नहीं रह जाता। तब हम सुख-दुख नहीं देखते। यही देखते हैं कि पति-पत्नी ने इस बीच एक-दूसरे की अच्छी-बुरी आदतों के साथ कितना एडजस्ट करने की आदत डाल ली है। तुम अपनी कहो, या तुहारी कहानी इससे अलग है? कहने लायक है ही कहां मेरे पास कुछ। क्यों, सुना तो था, मेरी शादी के साल भर बाद ही शहर के भीड़ भरे बाजारों से तुहारी भी बारात निकली थी और तुम एक चांद की प्यारी दुल्हन को याह कर लाए थे।

अब कहां की चंद्रमुखी और कैसी चंद्रमुखी? क्या मतलब? मेरी शादी एक बहुत बड़ा हादसा थी। सिर्फ दो ढाई महीने चली। ऐसा या हो गया था? शादी के पहले से उसका अपने जीजाजी से अफेयर थे। उसकी शादी ही इसी सोच के तहत की गई थी कि उसकी बहन का घर उजड़ने से बच जाए। लेकिन वह शादी के बाद भी छुप-छुप कर उनसे मिलने उनके शहर जाती रही थी। इधर मैंने तलाक की अर्जी दी थी और उधर उसकी दीदी ने खुदकुशी की थी। दो परिवार एक ही दिन उजड़े थे। शुरू-शुरू में तो सरेआम जीजा के घर जा बैठी थी। बाद में पता चला था, पागल-वागल हो गई थी। मेरे हिस्से में दो ही हादसे लिखे थे। न प्रेम सफल होगा न विवाह। तीसरे हादसे की तो लकीरें ही नहीं हैं मेरे हाथ में। तुमसे बातें करते करते वक्त का पता ही नहीं चला। मुझे अभी एक अर्जेंट मीटिंग में जाना है।

उसके पेपर्स भी देखने हैं। लेकिन तुम तो कह रहे थे, एक रुपए का और सिका नहीं है तुहारे पास। पिछले बीस मिनट से तुम पीसीओ से तो बात नहीं कर रहे। वैसे बोल कहां से रहे हो। उसे जाने दो। वैसे मुझे भी एक अर्जेंट मीटिंग के लिए निकलना है। कहां है तुहारी मीटिंग? ठीक उसी जगह जहां तुहारी मीटिंग है। क्या मतलब? मतलब साफ है डियर, तुहारे ही विभाग ने हमारी यूनिवर्सिटी के नॉन कॉनवेन्शनल एनर्जी रिसोर्सेज के प्रोजेट पर बात करने के लिए हमारी टीम को बुलवाया है। इसमें महत्वपूर्ण खबर सिर्फ इतनी ही है कि यह प्रोजेक्ट मेरे ही अधीन चल रहा है।

यह तो यहीं आकर पता चला कि अब तुम ही इस केस को डील करोगी और... ओह गॉड। आइ जस्ट कांट बिलीव। अब या होगा। तुमने पहले क्यों नहीं बताया। इतनी देर से मुझे बुद्धू बना रहे थे और... रिलैस डियर, तुहें बिलकुल भी परेशान होने की जरूरत नहीं है। मैं वहां यही जतलाऊंगा, तुमसे जिंदगी में पहली और आखिरी बार मिल रहा हूं। बस, एक ही बात का ख्याल रखना, अपना चश्मा टाइट करके ही मीटिंग में आना।

या समझूं मैं...

शिल्प शर्मा

आज खुद ही पूछ लेगी वो। अब जीवन में सेटल होना चाहती है। भागमभाग-रेलमपेल सब झेल चुकी है। आजकल के समय में 32 वर्ष की उम्र कोई ज्यादा नहीं होती। और घर बसाने का हक सबको है। अल्मारी खोली और फिरोजी सूट निकाल लिया। रवि हमेशा कहता था कि मुझपर ये रंग जंचता है। रवि! फिर रवि...तो या इस नाम से मुक्ति नहीं पा सकी है वो दो सालों के बाद भीड़ हमेशा सोचती है कि रवि नाम के हादसे से वो उबर चुकी है...पर या ये सच नहीं है? बिल्कुल सच है! झटके से फिरोजी सूट अंदर रख दिया उसने। अपनी पसंद के हरे रंग का सूट निकाल लिया। नौ बज रहे हैं और अब तक स्नान भी नहीं किया है उसने। बारह बजे मां से मिलने जाना है। आज कुछ और हिमत जुटानी होगी। हिमत की कमी तो कभी नहीं रही उसमें। उसके मॉम-डैड ने उसकी परवरिश ही ऐसी की है। या शारीरिक और या मानसिक, दोनों ही तरह से मजबूत है वो। नौ बरस की थी, जब मॉम ने उसे कराते लास में डाला था और बारहवीं में आते- आते उसे लैक-बेल्ट भी मिल गया था। डैड ने हमेशा अपने निर्णय खुद लेने की छूट दी। पढ़ाई अपनी मर्जी के विषय में की, लेकिन बाद में लगा गलत विषय ले लिया तो मॉम-डैड से डिस्कस कर के उसने अपना विषय बदला और अब अपना बुटीक चला रही है, जिसका रिस्पॉन्स इतना अच्छा है कि पिछले माह ही उसने अपना दूसरा बुटीक खोला है, दूसरी लोकैलिटी में। और वो चाहती है कि पूरे शहर में उसके बुटीक के आउटलेट्स हों, जिसके लिए उसकी पूरी तैयारी भी है। स्नान के बाद तुरंत चाय पीना उसे बहुत पसंद है।

पिछले 10 वर्षों से उनके यहां काम कर रही मेड सोभा को ये बात पता है इसलिए वो पहले ही टेबल पर चाय रख गई थी। सोभा का नाम तो शोभा है, लेकिन वो खुद अपना नाम सोभा कहती है तो अमिता भी उसे सोभा कहती है। अमिता को वो दिन याद आ गया, जब मॉम उसकी इस बात पर बहुत हंसी थीं। शोभा काम मांगने उनके घर आई थी और मॉम ने सारी पूछताछ कर उसे रखने का मन बना लिया था। अमिता कॉलेज से लौटी ही थी और घर पर मां को काम के लिए बाई से बात करते देख उसने पूछा,''मॉम इसे काम पर रख रही हैं क्या?'' और उनकी 'हां' सुनते ही तुरंत पलटकर पूछा,''क्या नाम है तुहारा?''''सोभा,'' ये जवाब पाते ही खिलखिलाकर हंस दी थी वो। शोभा उसे असमंजस से देखती रही और मॉम मुस्कुरा दीं।''तो ोभा कब से काम करने आ रही हो हमारे यहां?''''जब से आंटी कह दें। हम तो आज से ही कर सकते हैं।''''नहीं आज रहने दो। कल से आना और सुबह आठ बजे आ ही जाना,'' मॉम का जवाब पाकर वो चली गई। उसके जाते ही मॉम ने टोका,''किसी के नाम पर भी यूं हंसते हैं भला?'' और खुद भी जोर-जोर से खिलखिलाने लगीं।''वो भले ही सोभा कहे तुम तो शोभा कह सकती हो ना?'' खुद को संयत करते हुए उन्होंने कहा। ''नहीं मॉम अब तो मैं उसे सोभा ही बुलाऊंगी हमेशा। हमारे घर की सोभा,'' और वे दोनों समवेत स्वर में ठहाका लगा उठे थे। अपने काम के साथ-साथ मॉम और डैड को वो रोज़, कभी- कभी तो दिन में कई-कई बार याद कर लेती है। तीन बरस पहले डैड उन दोनों को अकेला छोड़ गए थे और उसके छह माह बाद मॉम भी चल बसीं। अब उसे यूं लगता है कि इस दुनिया में वो अकेली ही रह गई है। जब डैड नहीं रहे थे,

रवि था उसके साथ। उसका सहपाठी, सहयोगी और सहचर। ना...शादी तो नहीं हुई थी दोनों की, पर सहचर्य के लिए शादी कोई बंधन तो नहीं। मॉम-डैड तो पूरी तरह राजी थे उन दोनों की शादी के लिए, लेकिन... डैड के बाद के छह महीनों में उसकी पूरी ज़िंदगी ही बदल गई। अपनी मौत से लगभग दो-ढाई महीने पहले उन्होंने अमिता के सामने जिस राज का खुलासा किया, उसने तो अंदर तक हिला दिया था उसे। डैड ने उससे ये भी तो कहा था कि उन्हें उसपर पूरा भरोसा है कि वो परिस्थितियों को सही ढंग से समझेगी और उनसे वैसे ही उबरेगी, जैसे उन्होंने और मॉम ने उसे सिखाया है-बिल्कुल निर्भीक और साहसी तरीके से। मॉम ने उसे बताया कि जब अमिता उनके जीवन में आई तो कैसे खिला-खिला-सा हो गया उनका घर और कितनी मनुहार के बाद ईश्वर ने उनकी सुनी थी। पर वो इस सच्चाई को जानकर एक-दो दिन तक सदमे में थी कि उसके मॉम- डैड, उसके असली मॉम-डैड नहीं हैं। अमिता का तब का एक अतीत है, जब वो इस दुनिया में आई भी नहीं थी। दरअसल, उसकी मां एक बहुत अच्छे परिवार की महिला थीं, लेकिन मंदबुद्धि थीं। उनके माता-पिता यानी अमिता के नाना-नानी के देहांत के बाद कई रिश्तेदारों ने उनकी संपत्ति हथियाने के चक्कर में उन्हें अपने पास रखने की पहल की और कुछ महीनों तक रखा भी उन्हें। लेकिन इसका नतीजा थी-अमिता।

अमिता के पेट में होने के बावजूद, उसकी मां लोगों को क्या डॉक्टर को ये बताने में असमर्थ थीं कि अमिता का पिता कौन है? ऐसे में जो रिश्तेदार उन्हें ले गए थे, वो ही उन्हें वापस नाना-नानी के घर अकेला छोड़ गए। तब उनके पड़ोस में किराए से रह रहे उसके मॉम-डैड, जो नि:संतान दंपति थे, ने न सिर्फ उनका ध्यान रखा और प्रसव करवाया, बल्कि उसके नाना-नानी की संपत्ति को बेचकर मिले पैसों की एफ़डी खुलवाई और उसकी मां को मेंटल हॉस्पिटल में भर्ती करवा दिया। अमिता को उसका नाम, मॉम-डैड और घर मिल गया तो मॉम-डैड के जीवन में उसके रूप में एक नन्ही परी आ गई, जिसने उनके जीवन को गुलजार कर दिया। ये सच जानकर अमिता का अपसेट होना लाजमी था। वो हुई भी, लेकिन उसके जहन में ये बात कहीं ज्यादा स्पष्ट थी कि उसके मॉम-डैड केवल उसके ही नहीं, बल्कि उसकी मां के भी अपने हैं। गलत...उसके ही नहीं, बल्कि उसके मां के भी मॉम-डैड हैं, योंकि इतनी सही सोच के साथ देखभाल सिर्फ और सिर्फ माता-पिता ही तो कर सकते हैं! उसकी मॉम ने उसे बताया था कि डैड और वो खुद भी हमेशा, हर माह बिना नागा उसकी मां से मिलने जाते रहे हैं। ये सच्चाई बताने के बाद उसके मॉम-डैड ही उसे उसकी मां से मिलवाने ले गए। अपनी मां को देखकर उसके दिल में एकदम से प्यार उमड़ आया ऐसा भी तो नहीं हुआ था। बस, वो उन्हें एकटक देखती रही सोचती रही कि इस महिला के साथ क्या-क्या हुआ होगा और देखो इसे कुछ मालूम भी नहीं है। कितनी निरीह लगती है ये। उन्हें देखकर न जाने कैसा तो हो आया था उसका मन। इसी बीच उसने महसूस किया कि उसकी शक्ल अपनी मां से बहुत मिलती-जुलती है। इस एहसास के बाद, उसने पहली बार उन्हें छुआ। वो स्पर्श अजीब-सी झुरझुरी भर गया था उसके भीतर। इस स्पर्श ने शायद उसके भीतर ये एहसास जगाया कि ये उसकी जननी हैं, पर धीरे-धीरे ही वो खुद को उनसे जोड़ सकी और मॉम-डैड के साथ हर इतवार उनसे मिलने जाने लगी।

अपने अस्तित्व से जुड़ी ये बात अपने सहचर से छुपाने का सवाल ही नहीं उठता था। जब इन बातों का खुलासा हुआ तो रवि ने भी तो उसका चेहरा पढ़ लिया था। 'क्या बात है, बहुत अपसेट लग रही हो?' उसके ऐसा पूछते ही खुद को रोक नहीं सकी थी वो। उसके सीने पर सिर रखकर हिलक-हिलककर रोई थी। ना जाने कितनी देर... चाय खत्म करते ही उसने घड़ी पर नजर डाली। ग्यारह बज चुके थे। उसे अभी नाश्ता भी करना है और मन है कि बेलगाम घोड़े की तरह अतीत में घुसता ही चला जा रहा है...शायद भविष्य की तैयारी के लिए, क्योंकि वर्तमान को खुलकर जीने और भविष्य को भरपूर जी पाने की पूरी तैयारी रखनेवाली शसियत है उसकी। अतीत में डूबकर, उसी में डुबकियां लगाते हुए दम तोड़ देनेवाले लोगों में से नहीं है वो। ''''ज्यादा घुमाफिरा कर बातें करना नहीं आता मुझे। मैं घर बसाना चाहती हूं अब। या आप मुझसे शादी करेंगे?'' ये सवाल पूछते-पूछते अपने चेहरे पर उतर आई गरमाहट और तपन को महसूस कर रही थी वो। अपलक निहारते रहे उसे डॉ शांतनु, लेकिन कुछ कहा नहीं उन्होंने। चंद पलों तक मौन ही पसरा रहा उनके बीच। कुछ देर रुक कर उसने ही पूछा,''तो क्या समझूं मैं?'' डॉ शांतनु अपनी कुर्सी से उठकर उसके पास पहुंचे और हौले-से उसके हाथों को अपने हाथों में ले लिया...क्या समझूं मैं?

वचन सूत्र

प्राची भारद्वाज

नए घर को सजाने की इच्छा नयना में हमेशा से थी। जब किशोरावस्था में प्रवेश किया था, उसने तभी से पत्रिकाओं के गृहसज्जा विशेषांकों पर उसकी दृष्टि अटक जाया करती थी। मां से जिद कर वह इन पत्रिकाओं को खरीदती और फिर कई-कई बार पन्ने पलटकर अपने घर को सजाने के स्वप्न बुनती रहती। इतने वर्षोंपरांत आज उसकी ये इच्छा पूरी हो रही थी। शाश्वत का तबादला बैंगलोर में होने से वो अपना छोटा-सा नीड़ बसाने यहां आ गए थे। वैसे तो भोपाल की अरेरा कॉलोनी में भी उनका शानदार मकान है, किन्तु एक बसे-बसाए संयुक्त परिवार में ब्याह कर आई नयना को एक भी मौका नहीं मिला था वहां गृहसज्जा का। फर्नीचर का कोई हिस्सा हो या शोपीस का कोई टुकड़ा, किसी भी वस्तु की जगह बदलने का अधिकार उसे सासू मां से नहीं मिला था। आखिर वो घर सासू मां ने अपने टेस्ट से सजाया था। इसीलिए बैंगलोर आकर वो बहुत प्रसन्न थी। बीटीएम लेआउट में एक दो-कमरे के मकान में शिफ्ट कर लिया था। हालांकि ये घर भोपाल के घर की तुलना में काफी छोटा था। पर हम बंदे भी तो तीन ही हैं, और कितना बड़ा घर चाहिए हमें। शाश्वत का कथन सटीक था। एक कमरे में आठ वर्षीय बेटा आरोह और दूसरे में नयना-शाश्वत सब कुछ ठीक से सेट होने लगा था। धीरे-धीरे जीवन अपनी रफ़्तार पकड़ने लगा। आरोह सुबह स्कूल चला जाता और शाश्वत अपने दफ़्तर। फिर घर को सुव्यवस्थित कर नयना असर वॉक पर निकल जाया करती थी। ''यहां का मौसम, मैं या बताऊं... ठीक ही कहते हैं इसे एसी सिटी।

जब दिल करे तब बाहर निकल सकते हैं,'' नयना अपनी बड़ी बहन से फोन पर बातें करती हुई चहलकदमी कर रही थी। भोपाल की तरह नहीं कि भरी दुपहरी में इंसान घर से तो या कमरे से भी बाहर न निकलना चाहे। बैंगलोर में ही तो सौरेश भैया रहते हैं, तू कभी मिल यों नहीं लेती उनसे?,'' दीदी से ये बात जानकार नयना का मन सौरेश भैया से मिलने का हो आया। हां दीदी, शादी के बाद कभी मिलना ही नहीं हुआ उनसे। पिछली बार जब मिले थे उनकी शादी में तब मैं पोस्टग्रेजुएशन के आखिरी वर्ष की परीक्षाएं दे रही थी। सौरेश, नयना की बुआ का लड़का था। उन दोनों की उम्र में तीन वर्ष का अंतराल होने के कारण उनकी आपस में अच्छी निभती थी। बुआ काफी दूर दूसरे शहर में रहती थीं। फूफाजी का परिवार काफी बड़ा था और सारी जिम्मेदारियां उन्हीं पर थीं सो बुआ का आना कम ही हो पता था। दो- तीन वर्षों में चकर लगता था एक-दूसरे के घर का, छुट्टियों में या कोई शादी-याह आ गया तो उसमें सभी की टोली एकत्रित हो जाती थी। बड़े होने तक सभी भाई-बहनों की शादियां हो चुकी थीं। सौरेश भैया की शादी में नयना गई थी पर इसकी शादी में सौरेश विदेश गया होने के कारण नहीं आ पाया था। फिर सभी अपनी-अपनी जिंदगी में व्यस्त हो गए। आज ये पता चलने पर कि वो भी इसी शहर में है, नयना को ये शहर कुछ अपना-सा लगने लगा था।

उसी दिन बुआ को फोन किया और सौरेश का फोन-नंबर लिया। पहचानो कौन बोल रही हूं,'' बाल-सुलभ हंसी-ठिठोली करने लगी नयना फोन पर। आप ही बता दीजिए, हम तो आपकी आवाज सुनकर ही हार बैठे हैं,'' सौरेश की आवाज पहले के मुकाबले परिपव प्रतीत हो रही थी। किन्तु उसके बात करने का रंग-ढंग नयना को किंचित अजीब लगा। न जाने यों पर उसके जहन में फिल्मों के पुराने विलेन रंजीत की छवि अवतरित हो गई, मानो वो मुंह बिचकाए अपनी गर्दन पर हाथ फिराते हुए ये कह रहा हो। बात को लंबा न खींचते हुए नयना बोल पड़ी,सौरेश भैया, मैं नयना! मैं अब बैंगलोर में रहने आ गई हूं। पता चला आप भी यहीं रहते हैं सो फोन घुमा डाला। ओह, नयना तुम,'' शायद सौरेश, नयना की आवाज से भ्रमित हो किसी और को समझ बैठा था। कैसी हो, कहां रह रही हो? तुहारे दूल्हे मियां कहां काम करते हैं। और दोनों का काफी अरसे से छूटा हुआ तार

एक बार फिर जुड़ने लगा। नयना ने अपने घर का पता बताया तो सौरेश बोला, मेरा आफिस कुछ खास दूर नहीं है। चल, आता हूं तुझसे मिलने अभी। अभी,'' नयना का चौंकना स्वाभाविक था। शाम को आओ न भाभी और गुड़िया को लेकर। इनसे भी मिलना हो जाएगा। तेरे 'इनसे' भी मिल लेंगे, पर अभी तुझसे मिलने का मन हो रहा है। देखूं तो सही इतने सालों में कितना बदल गई है। या अब भी माथे पर गिरती अपनी लट को फूंक से उड़ाती है?। सौरेश की बात से नयना के मस्तिष्क पटल पर लड़कपन की स्मृतियां तैरने लगीं। सौरेश एक छोटे कस्बे में रहता था और नयना महानगर में ही पली-बड़ी थी।

उसकी स्टाइल्स से सौरेश सदैव प्रभावित रहा था। जब भी मिलता और नयना उसे हैलो-हाय करती तब हमेशा कहता,'जरा फिर से हाय बोल कर दिखा, तेरे मुंह से बहुत अच्छा लगता है।' सौरेश को अब तक याद है कि नयना माथे पर गिरती अपनी लट को फूंक से उड़ाती थी ये सोच कर उसे हंसी आ गई। कुछ ही देर पश्चात घंटी बजी तो नयना समझ गई कि सौरेश भैया होंगे। उनके आने से पूर्व उसने भोजन की तैयारी कर ली थी फटाफट आलू-टमाटर की तीखी रसेदार सजी, और मिस-वेज बना डाली थी। आटा भी मल कर रख दिया था, बस रोटियां सेंकनी बाकी थीं। इन्हीं सब कामों को निबटाते उसे लिपस्टिक लगाने तक का समय नहीं मिला था। बालों को जूड़े में बांधते हुए उसने दरवाजा खोला। सौरेश भैया समकक्ष खड़े थे। काफी बदलाव आ गया था उनमें बाल उड़ गए थे, चेहरे पर परिपवता आ गई थी और चश्मा भी लग गया था। भैया,'' कहते हुए नयना जैसे ही आगे बड़ी सौरेश ने लगभग खींचते हुए उसे अपनी बाहुपाश में जकड़ लिया। और फिर इतना कसकर गले लगाया कि उसकी ब्रा का हुक उसकी पीठ में धंस गया।

उसने सौरेश की मुट्ठियों को अपनी पीठ पर महसूस किया जैसे वो उसे सौरेश की छाती में चिपकाए डाल रही हों। नयना कसमसा उठी। ये क्या तरीका है मिलने का कोई भाई-बहन ऐसे गले मिलते हैं भला? जैसे ही वो छिटककर दूर हुई, सौरेश हंसते हुए सोफे पर विराजमान हो गया। और सुनाओ क्या हाल-चाल हैं तेरे? यहां कैसे आ गई, हमने तो भोपाल में याही थी,'' सौरेश सामान्य ढंग से बातचीत करने

लगा। नयना ने अपना मूड ठीक किया, सोचा शायद इतने वर्षों से संयुत परिवार और एक बी-ग्रेड शहर में रहने के कारण वो हर चीज को संकीर्णता से देखने लगी है। उसने बरसों बाद मिले अपने भाई से खूब गप्पें लगाईं, उन्हें खाना परोसा और अपनी शादी का एलबम भी दिखाया। जल्दी ही फिर मिलने का वादा कर सौरेश चलने को हुआ। नयना उसे विदा करने लिपट तक आई। एक सेल्फी तो बनती है,'' सौरेश ने नयना के साथ दो-तीन सेल्फी लीं। जाने से पहले एक बार फिर सौरेश ने नयना को अपने सीने से एकमेक कर लिया। एक बार फिर नयना को सौरेश की मुट्ठियों का धका महसूस हुआ। क्या ये गलत फहमी है या फिर...नयना एक अजीब उलझन अनुभव करने लगी।

बरसों बाद मिला भाई, उसके बारे में ऐसी शंका अपने पति से भी नहीं बांट सकती थी। कमरे की बाी बुझा जब नयना बिस्तर पर लेटी तो उसके मन-मस्तिष्क में जो कीड़े कुलबुला रहे थे वो और तेजी से हरकत में आने लगे। सौरेश भैया हमेशा ही नयना के इर्द-गिर्द रहा करते थे। उसे याद आने लगी ममी की चिड़चिड़ाहट,''ये सौरेश तेरा हाथ यों पकड़े रहता है?। किशोरावस्था में उसे ममी की ये सोच कितनी ओछी लगती थी। सौरेश का सदा उसकी प्रशंसा करना, उसकी अदाओं की तारीफों के पुल बांधना, उसे अपनी गर्ल-फ्रेंड्स के किस्से सुनाना, नयना को कितनी भाती थी इतनी तवज्जो। एक फिल्मी रील की तरह पुरानी बातें उसकी आंखों के सामने प्रतिबिंबित होने लगीं। जब दीदी की शादी में सौरेश भैया आए थे तब मिलते ही उन्होंने हाथ आगे बढ़ाया था। ओए होए, हैंड शेक!,'' हंसते हुए नयना के हाथ मिलाने पर उन्होंने अपनी एक अंगुली नयना की हथेली में धंसा दी थी।

अटपटा-सा लगा था तब भी उसे। फिर कई बार उन्होंने ऐसा ही किया था। ऐसे ही जब नयना उनकी शादी में शामिल होने गई थी तब हल्दी की रस्म के दौरान, जब नयना उन्हें हल्दी लगाने आई थी तब सौरेश ने अपने हल्दी- लगे गालों को नयना के गालों पर रगड़ दिया था। तब उसकी किशोरी बुद्धि इन हरकतों को खेल समझती रही। किन्तु आज शादी के इतने समयोपरांत ऐसे कार्यकलाप उसे जंच नहीं रहे थे। अगले पक्ष में नयना को सपरिवार सौरेश व उसकी पत्नी अपूर्वा ने अपने घर आमंत्रित किया। आरोह, शाश्वत तथा नयना उनके घर पहुंचे।

सौरेश एक उच्च पदाधिकारी था सो उसका घर भी उसकी वस्तु-स्थिति का अच्छा झरोखा था। कोरमंगला में स्थित शोभा बिल्डर द्वारा निर्मित ऊंची इमारतों में से एक, अपूर्वा भाभी ने घर बहुत ही टेस्टफुली सजाया था। उनके घर की साज-सज्जा, उनका फर्नीचर, दीवारों पर टंगी सिग्नेचर-चित्रकारियां सबने नयना का मन मोह लिया।''वाह भाभी, कितना सुंदर रखा है आपने घर,'' घर में प्रवेश करने पर नयना और अपूर्वा ने एक-दूसरे को आलिंगनबद्ध किया। नयना फिर सौरेश की ओर अग्रसर हुई।

वो देखना चाहती थी कि सौरेश का उसे गले लगाने का ढंग आज परिवार की मौजूदगी में भी वैसा ही था या कुछ अलग। लेकिन आज तो सौरेश ने उसे गले लगाया ही नहीं। केवल उसके कंधे पर हल्के से थपथपाया और आगे बढ़ गया। आज सौरेश उसकी तरफ देख भी नहीं रहा था। अपितु आज वो सबके समक्ष अपनी पत्नी को देख-देख मुस्कुरा रहा था। कभी अपूर्वा के कान में हौले से कुछ खुसफुसा कर हंस देता तो कभी उसका हाथ थाम अपने कंधे को उसके कंधे से टकराता। घर लौट कर शाश्वत कहने लगे, तुहारे भैया-भाभी में बड़ा प्यार है। देख कर लगता ही नहीं कि शादी को इतने बरस बीत चुके, लगता है जैसे आज भी हनीमून चल रहा हो। बीवी को खुश रखने का मंत्र आता है उन्हें। नयना का मन सौरेश की तरफ से कसैला हो चुका था।

अकेले में कुछ और व्यवहार और पत्नी व परिवार के समक्ष कुछ और। इसका अर्थ तो शीशे की भांति पारदर्शी है- सौरेश भाई-बहन के रिश्ते को ताक पर रखकर मौके का फायदा उठाता रहा और नादान नयना उसकी मंशा समझ नहीं पाई। मां ने इशारा किया तब भी नहीं। उसके परिवार में ऐसी बातें खुल कर नहीं की जाती थीं तो मां ने भी कुछ खुल कर नहीं कहा।

मेरी माँ कहाँ?

कृष्णा सोबती

बहुत दिन के बाद उसने चाँद-सितारे देखे हैं। अब तक वह कहाँ था? नीचे, नीचे, शायद बहुत नीचे...जहाँ की खाई इनसान के खून से भर गई थी। जहाँ उसके हाथ की सफाई बेशुमार गोलियों की बौछार कर रही थी। लेकिन, लेकिन वह नीचे न था। वह तो अपने नए वतन की आजादी के लिए लड़ रहा था। वतन के आगे कोई सवाल नहीं, अपना कोई खयाल नहीं! तो चार दिन से वह कहाँ था? कहाँ नहीं था वह? गुजराँवाला, वजीराबाद, लाहौर! वह और मीलों चीरती हुई ट्रक। कितना घूमा है वह? यह सब किसके लिए? वतन के लिए, कौम के लिए और...? और अपने लिए! नहीं, उसे अपने से इतनी मुहब्बत नहीं! क्या लंबी सड़क पर खड़े-खड़े यूनस खाँ दूर-दूर गाँव में आग की लपटें देख रहा है? चीखों की आवाज उसके लिए नई नहीं। आग लगने पर चिल्लाने में कोई नयापन नहीं। उसने आग देखी है। आग में जलते बच्चे देखे हैं, औरतें और मर्द देखे हैं। रात-रात भर जल कर सुबह खाक हो गए मुहल्लों में जले लोग देखे हैं! वह देख कर घबराता थोड़े ही है? घबराए क्यों? आजादी बिना खून के नहीं मिलती, क्रांति बिना खून के नहीं आती, और, और, इसी क्रांति से तो उसका नन्हा-सा मुल्क पैदा हुआ है! ठीक है। रात-दिन सब एक हो गए। उसकी आँखें उनींदी हैं, लेकिन उसे तो लाहौर पहुँचना है। बिलकुल ठीक मौके पर। एक भी काफिर जिंदा न रहने पाए। इस हलकी-हलकी सर्द रात में भी 'काफिर' की बात सोच कर बलोच जवान की आँखें खून मारने लगीं। अचानक जैसे टूटा हुआ क्रम फिर जुड़ गया है। ट्रक फिर चल पड़ी है। तेज रफ्तार से।

सड़क के किनारे-किनारे मौत की गोदी में सिमटे हुए गाँव, लहलहाते खेतों के आस-पास लाशों के ढेर। कभी-कभी दूर से आती हुई अल्ला-हो-अकबर और हर-हर महादेव की आवाजें। हाय, हाय...पकड़ो-पकड़ो...मारो-मारो...। यूनस खाँ यह सब सुन रहा है। बिलकुल चुपचाप। इससे कोई सरोकार नहीं उसे। वह तो देख रहा है अपनी आँखों से एक नई मुगलिया सल्तनत शानदार, पहले से कहीं ज्यादा बुलंद...।

चाँद नीचे उतरता जा रहा है। दूध-सी चाँदनी नीली पड़ गई है। शायद पृथ्वी का रक्त ऊपर विष बन कर फैल गया है। देखो, जरा ठहरो। यूनस खाँ का हाथ ब्रेक पर है। यह यह क्या? एक नन्ही-सी, छोटी-सी छाया ! छाया? नहीं, रक्त से भीगी सलवार में मूर्च्छित पड़ी एक बच्ची! बलोच नीचे उतरता है। जख्मी है शायद! मगर वह रुका क्यों? लाशों के लिए कब रुका है वह? पर यह एक घायल लड़की...। उससे क्या? उसने ढेरों के ढेर देखे हैं औरतों के...मगर नहीं, वह उसे जरूर उठा लेगा। अगर बच सकी तो...तो...। वह ऐसा क्यों कर रहा है यूनस खाँ खुद नहीं समझ पा रहा...। लेकिन अब इसे वह न छोड़ सकेगा...काफिर है तो क्या?

बड़े-बड़े मजबूत हाथों में बेहोश लड़की। यूनस खाँ उसे एक सीट पर लिटाता है। बच्ची की आँखें बंद हैं। सिर के काले घने बाल शायद गीले हैं। खून से और, और चेहरे पर...? पीले चेहरे पर...रक्त के छींटे।

यूनस खाँ की उँगलियाँ बच्ची के बालों में हैं और बालों का रक्त उसके हाथों में...शायद सहलाने के प्रयत्न में! पर नहीं, यूनस खाँ इतना भावुक कभी नहीं था। इतना रहम, इतनी दया उसके हाथों में कहाँ से उतर आई है? वह खुद नहीं जानता। मूर्च्छित बच्ची ही क्या जानती है कि जिन हाथों ने उसके भाई को मार कर उस पर प्रहार किया था उन्हीं के सहधर्मी हाथ उसे सहला रहे हैं!

यूनस खाँ के हाथों में बच्ची...और उसकी हिंसक आँखें नहीं, उसकी आर्द्र आँखें देखती हैं दूर कोयटे में एक सर्द, बिलकुल सर्द शाम में उसके हाथों में बारह साल की खूबसूरत बहिन नूरन का जिस्म, जिसे छोड़ कर उसकी बेवा अम्मी ने आँखें मूँद ली थीं।

सनसनाती हवा में कब्रिस्तान में उसकी फूल-सी बहिन मौत के दामन में हमेशा-हमेशा के लिए दुनिया से

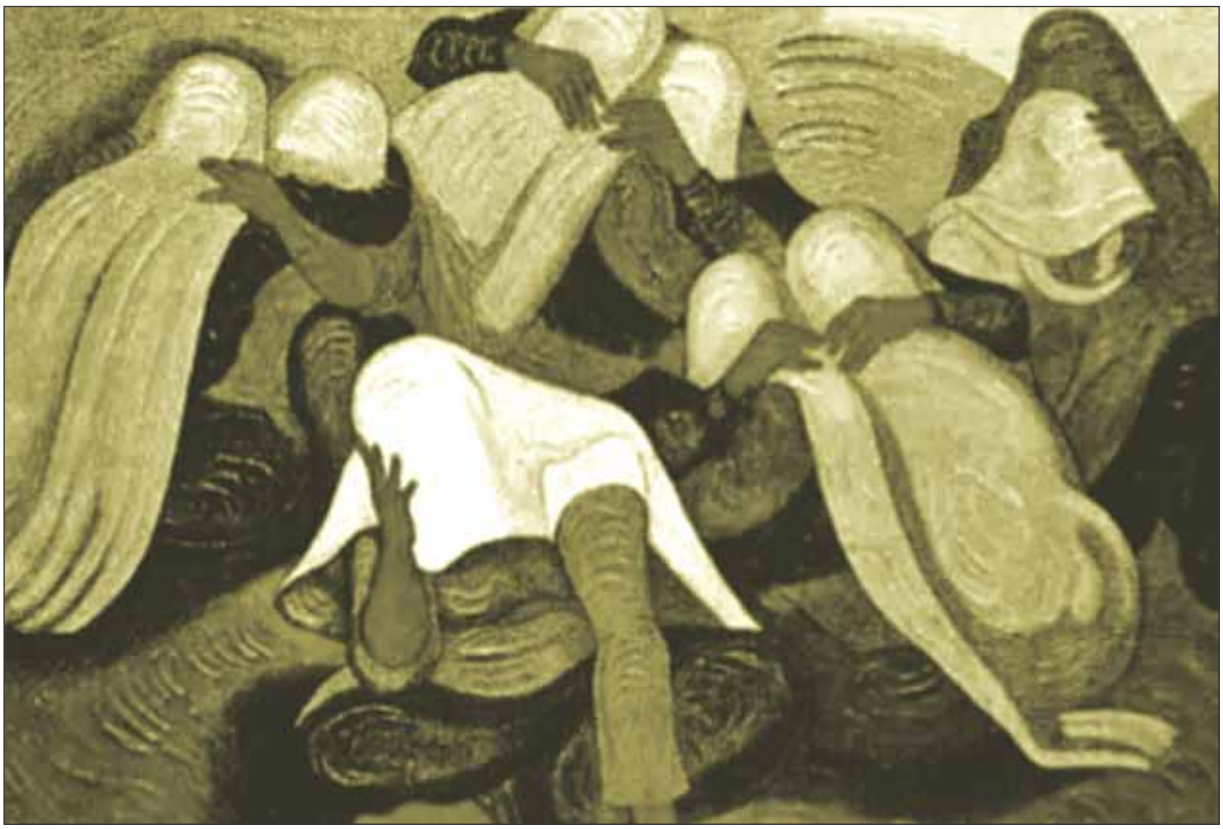

बेखबर...और उस पुरानी याद में काँपता हुआ यूनस खाँ का दिल-दिमाग।

आज उसी तरह, बिलकुल उसी तरह उसके हाथों में...। मगर कहाँ है वह यूनस खाँ जो कत्ले-आम को दीन और ईमान समझ कर चार दिन से खून की होती खेलता रहा है...कहाँ है? कहाँ है?

यूनस खाँ महसूस कर रहा है कि वह हिल रहा है, वह डोल रहा है। वह कब तक सोचता जाएगा। उसे चलना चाहिए, बच्ची के जख्म !...और फिर, एक बार फिर थपथपा कर, आदर से, भीगी-भीगी ममता से बच्ची को लिटा यूनस खाँ सैनिक की तेजी से ट्रक स्टार्ट करता है। अचानक सूझ जानेवाले कर्तव्य की पुकार में। उसे पहले चल देना चाहिए था। हो सकता है यह बच्ची बच जाए...उसके जख्मों की मरहम-पट्टी। तेज, तेज और तेज ! ट्रक भागी जा रही है। दिमाग सोच रहा है वह क्या है? इसी एक के लिए क्यों? हजारों मर चुके हैं। यह तो लेने का देना है। वतन की लड़ाई जो है! दिल की आवाज है चुप रहो...इन मासूम बच्चों की इन कुरबानियों का आजादी के खून से क्या ताल्लुक? और नन्ही बच्ची बेहोश, बेखबर... लाहौर आनेवाला है। यह सड़क के साथ-साथ बिछी हुई रेल की पटरियाँ। शाहदरा और अब ट्रक लाहौर की सड़कों पर है। कहाँ ले जाएगा वह? मेयो हास्पिटल या सर गंगाराम?...गंगाराम क्यों? यूनस खाँ चौंकता है। वह क्या उसे लौटाने जा रहा है? नहीं, नहीं, उसे अपने पास रखेगा। ट्रक मेयो हास्पिटल के सामने जा रुकती है।

और कुछ क्षण बाद बलोच चिंता के स्वर में डाक्टर से कह रहा है, डाक्टर, जैसे भी हो, ठीक कर दो...इसे सही सलामत चाहता हूँ मैं ! और फिर उत्तेजित हो कर, डाक्टर, डाक्टर... उसकी आवांज संयत नहीं रहती।

हाँ, हाँ, पूरी कोशिश करेंगे इसे ठीक करने की। बच्ची हास्पिटल में पड़ी है। यूनस खाँ अपनी डयूटी पर है, मगर कुछ अनमना-सा हैरान फिकरमंद। पेट्रोल कर रहा है।

लाहौर की बड़ी-बड़ी सड़कों पर। कहीं-कहीं रात की लगी हुई आग से धुआँ निकल रहा है। कभी-कभी डरे हुए, सहमे हुए लोगों की टोलियाँ कुछ फौजियों के साथ नजर आती हैं। कहीं उसके अपने साथी शोहदों के टोलों को इशारा

करके हँस रहे हैं। कहीं कूड़ा-करकट की तरह आदमियों की लाशें पड़ी हैं। कहीं उजाड़ पड़ी सड़कों पर नंगी औरतें, बीच-बीच में नारे-नारे, और ऊँचे! और यूनस खाँ, जिसके हाथ कल तक खूब चल रहे थे, आज शिथिल हैं। शाम को लौटते हुए जल्दी-जल्दी कदम भरता है। वह अस्पताल नहीं, जैसे घर जा रहा है।

एक अपरिचित बच्ची के लिए क्यों घबराहट है उसे? वह लड़की मुसलमान नहीं, हिंदू है, हिंदू है।

दरवाजे से पलंग तक जाना उसे दूर, बहुत दूर जाना लग रहा है। लंबे लंबे डग। लोहे के पलंग पर बच्ची लेटी है। सफेद पट्टियों से बँधा सिर। किसी भयानक दृश्य की कल्पना से आँखें अब भी बंद हैं। सुंदर-से भोले मुख पर डर की भयावनी छाया...। यूनस खाँ कैसे बुलाए क्या कहे? नूरन नाम ओठों पर आके रुकता है। हाथ आगे बढ़ते हैं। छोटे-से घायल सिर का स्पर्श, जिस कोमलता से उसकी उँगलियाँ छू रही हैं उतनी ही भारी आवाज उसके गले में रुक गई है।

अचानक बच्ची हिलती है। आहत-से स्वर में, जैसे बेहोशी में बड़बड़ाती है कैंप, कैंप...कैंप आ गया। भागो...भागो...भागो...। कुछ नहीं, कुछ नहीं देखो, आँखें खोलो...। आग, आग...वह गोली...मिलटरी...। बच्ची उसे पास झुके देखती है और चीख मारती है... डाक्टर, डाक्टर...डाक्टर, इसे अच्छा कर दो। डाक्टर अनुभवी आँखों से देख कर कहता है, तुमसे डरती है। यह काफिर है, इसीलिए। काफिर...यूनस खाँ के कान झनझना रहे हैं, काफिर...काफिर...क्यों बचाया जाए इसे? काफिर?...कुछ नहीं...मैं इसे अपने पास रखूँगा! इसी तरह बीत गईं वे खूनी रातें। यूनस खाँ विचलित-सा अपनी डयूटी पर और बच्ची हास्पिटल में। एक दिन। बच्ची अच्छी होने को आई। यूनस खाँ आज उसे ले जाएगा। डयूटी से लौटने के बाद वह उस वार्ड में आ खड़ा हुआ।

बच्ची बड़ी-बड़ी आँखों से देखती है। उसकी आँखों में डर है, घृणा है और, और, आशंका है।

यूनस खाँ बच्ची का सिर सहलाता है, बच्ची काँप जाती है! उसे लगता है कि हाथ गला दबोच देंगे। बच्ची सहम कर पलकें मूँद लेती है! कुछ समझ नहीं पाती कहाँ है वह? और यह बलोच?...वह भयानक रात! और उसका भाई! एक झटके के साथ उसे याद आता है कि भाई की गर्दन गँड़ासे से दूर जा पड़ी थी! यूनस खाँ देखता है और धीमे से कहता है, अच्छी हो न ! अब घर चलेंगे! बच्ची काँप कर सिर हिलाती है, नहीं-नहीं, घर...घर कहाँ है! मुझे तुम मार डालोगे। यूनस खाँ देखना चाहता था नूरन, लेकिन यह नूरन नहीं, कोई अनजान है जो उसे देखते ही भय से सिकुड़ जाती है। बच्ची सहमी-सी रुक-रुक कर कहती है, घर नहीं, मुझे कैंप में भेज दो। यहाँ मुझे मार देंगे...मुझे मार देंगे...। यूनस खाँ की पलकें झुक जाती हैं। उनके नीचे सैनिक की क्रूरता नहीं, बल नहीं, अधिकार नहीं। उनके नीचे है एक असह्य भाव, एक विवशता...बेबसी। बलोच करुणा से बच्ची को देखता है। कौन बचा होगा इसका? वह इसे पास रखेगा। बलोच किसी अनजान स्नेह में भीगा जा रहा है...। बच्ची को एक बार मुस्कराते हुए थपथपाता है, चलो चलो, कोई फिक्र नहीं, हम तुम्हारा अपना है...। ट्रक में यूनस खाँ के साथ बैठ कर बच्ची सोचती है, बलोच कहीं अकेले में जा कर उसे जरूर मार देनेवाला है...गोली से, छुरे से ! बच्ची बलोच का हाथ पकड़ लेती है, खान, मुझे मत मारना...मारना मत...। उसका सफेद पड़ा चेहरा बता रहा है कि वह डर रही है। खान बच्ची के सिर पर हाथ रखे कहता है, नहीं-नहीं, कोई डर नहीं...कोई डर नहीं...तुम हमारा सगा के माफिक है...। एकाएक लड़की पहले खान का मुँह नोचने लगती है फिर रो-रो कर कहती है, मुझे कैंप में छोड़ दो, छोड़ दो मुझे। खान ने हमदर्दी से समझाया, %सब्र करो, रोओ नहीं...तुम हमारा बच्चा बनके रहेगा। हमारे पास। नहीं... लड़की खान की छाती पर मुट्ठियाँ मारने लगी, तुम मुसलमान हो...तुम...। एकाएक लड़की नफरत से चीखने लगी, मेरी माँ कहाँ है! मेरे भाई कहाँ हैं! मेरी बहिन कहाँ...।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक अरुण पटेल द्वारा प्रियंका ऑफसेट, 25-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स, एमपी नगर, जोन-1, भोपाल से मुद्रित कर ई-100/41, शिवाजी नगर, भोपाल, मप्र-462016, से प्रकाशित। **संपादक- अरुण पटेल**

फोन न.0755-2552432, मो. 9425010804, ईमेल: raghukalash@gmail.com

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा। RNI No. MPHIN/2002/07269